॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
May Allmighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path

सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक पत्र

संस्कृति संचार

जन्म शताब्दी 1911 2011

जन्म शताब्दी महोत्सव विशेषांक । पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, देव संस्कृति विवि (हरिद्वार) । नवंबर 20 वर्ष : 03, अंक 06, पृष्ठ : 16 । मूल्य : ₹ 5.00

युग संधि की इस बेला में वातावरण क्रमशः अधिक गरम होता जा रहा है। सृजन शिल्पियों का उत्साह, साहस और पुरुषार्थ किसी सशक्त फब्बारे की तरह उछल और मचल रहा है। उनके सृजन संकल्प के प्रचंड वेग को देख इन दिनों असुरता मुंह छिपाते फिर रही है। आने वाले वर्षों में यदि उन्हें कहीं सिर छिपाने की जगह न मिले तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि युग निर्माण, युग परिवर्तन का संकल्प महाकाल का है जो निश्चित है, अटल है, जिसे होना है और जो होकर रहेगा। इसकी एक झलक इस विराट आयोजन में भी सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रही है, जिसकी अनुभूति यहाँ आए हर लोग कर रहे हैं।

युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जन्म शताब्दी समारोह

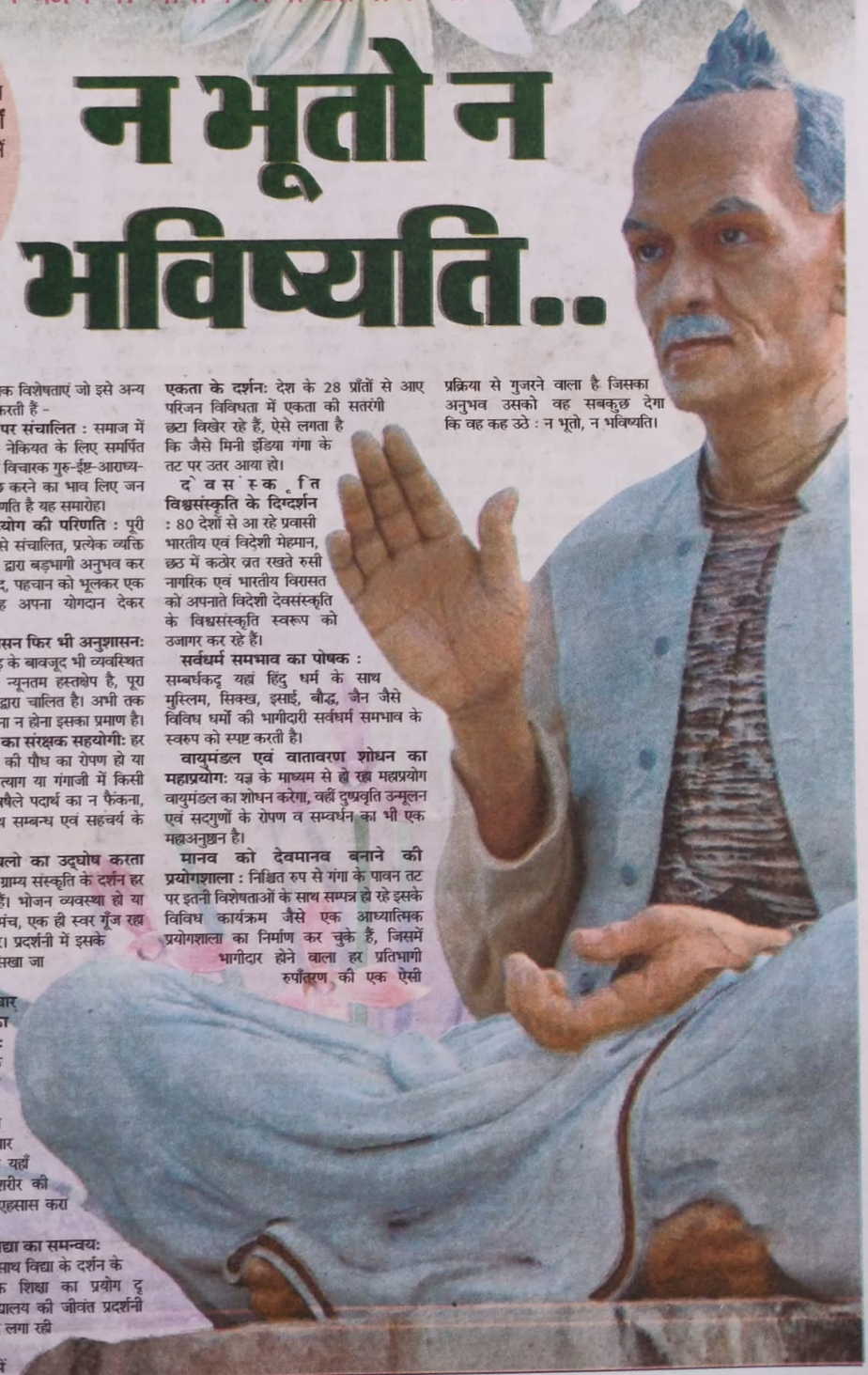

न भूतो न भविष्यति..

ऐसा लग रहा है मानो देवगंगा अध्यात्म के शिखरों से प्रवाहित होती हुई हरिद्वार की पावन धरा पर उतर आई हों। सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो इसमें भाग ले रहे हैं या किसी रुप में इसके साक्षी बन रहे हैं, क्योंकि ऐसी जन्मशताब्दी अगले सौ वर्ष बाद अर्थात् 2111 में ही आएगी। 1551 कुण्डीय यज्ञ के साथ सम्पन्न हो रहा यह आयोजन, गायत्री परिवार के इतिहास में पहली बार हो रहा है, जो स्वयं में अद्वितीय एवं अभूतपूर्व है।

इससे पूर्व 1958 में 1008 कुण्डीय महायज्ञ हुआ था, जिसे ब्रह्मास्त्र प्रयोग की संज्ञा दी गई थी और यह युग निर्माण के संगठन का आधार बना था। अतिशय बिनम्रता में गुरुदेव कह गए थे कि ऐसा आयोजन महाभारत के बाद पहली वार हो रहा है, जबकि ऐसा आयोजन मानव इतिहास में पहली बार हुआ था।

हरिद्वार में गंगातट पर सम्पन्न हो रहा यह समारोह भी अपनी भव्यता, विराटता एवं सुव्यवस्था के आधार पर कुछ ऐसा ही आयोजन है, जो मानव इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था और सम्भवतः फिर कभी हो।

विराटता का आलम यह है कि लगभग 50 वर्ग किमी तक इसका फैलाव व विस्तार गौरीशकंर द्वीप, बैरागी द्वीप, चंडी द्वीप, पंतद्वीप, लालजीवाला, रोड़ी बेलवाला, टूरिस्ट क्षेत्र जैसे सप्तद्वीपों तक है। लगभग 5 लाख लोगों के ठहरने, खाने एवं रहने की यहाँ वृहद व्यवस्था बन चुकी है। 24 नगरों में बँटे विभिन्न द्वीप आपस में पाँच पुलों के साथ जुड़े हुए हैं। संभावना है कि 10 तारीख तक करोड़ों लोग इस ऐतिहासिक आयोजन के गवाह बनेंगे।

आयोजन की मौलिक विशेषता इसमें भाग ले रहे श्रद्धालुओं का समर्पण, सेवा भाव एवं निष्ठा है, जो उन्हें यहाँ कई सप्ताह-माह पूर्व खींच लाई और निस्वार्थ भाव के साथ रात-दिन अथक श्रम करने की प्रेरणा-शक्ति दी। समाचार पत्रों में यदा-कदा इनके त्याग-तप की आदर्श गाथाएं छपती रहती हैं, जबकि यहाँ तो हर नगर में अनगिन प्रभु श्रीराम के हनुमान, जामवंत, रीछ, वानर व गिलहरी छिपे हैं व मौन रहकर अपने निश्चल प्रेम व श्रद्धा के पुष्प चढ़ा रहे हैं और उनके लवों पर यदि कोई गीत है संगीत है तो वह एक ही है दृ राम काज किए बिना मोहि नहीं विश्राम।

इन्हीं के श्वेद कणों से सींचित यह पावन भूमि यथार्थ में यज्ञभूमि के रुप में रुपाँतरिक हो चुकी है और कुंभक्षेत्र की पापनाशिनी एवं प्राणदायिनी क्षमता शतगुणित हो चुकी है। तैयारी से लेकर भागादारी तक जो मिसाल इन्होंने कायम की है, उसका ज्ञापन शब्दों से सम्भव नहीं है। वह सर्वथा स्तुत्य एवं वन्दनीय है।

आयोजन की मौलिक विशेषताएं जो इसे अन्य आयोजनों से अलग करती हैं -

आस्था की धुरी पर संचालित : समाज में सच्चाई, अच्छाई एवं नेकियत के लिए समर्पित एक संत, सुधारक एवं विचारक गुरु-ईष्ट-आराध्य-युगपुरुष के लिए कुछ करने का भाव लिए जन आस्था की सहज परिणति है यह समारोह।

समर्पित जन सहयोग की परिणति : पूरी तरह से जन सहयोग से संचालित, प्रत्येक व्यक्ति इसमें अपनी भागीदारी द्वारा बड़भागी अनुभव कर रहा है। अपने नाम, पद, पहचान को भूलकर एक स्वयंसेवक की तरह अपना योगदान देकर गौरवान्वित है।

न शासन, न प्रशासन फिर भी अनुशासन: पूरी व्यवस्था एक भीड़ के बावजूद भी व्यवस्थित है। प्रशासन का यहाँ न्यूनतम हस्तक्षेप है, पूरा शासन स्वअनुशासन द्वारा चालित है। अभी तक किसी अशोभनीय घटना न होना इसका प्रमाण है।

प्रकृति-पर्यावरण का संरक्षक सहयोगी: हर तम्बू के बाहर तुलसी की पौध का रोपण हो या प्लास्टिक के सर्वथा त्याग या गंगाजी में किसी तरह की गंदगी एवं विषैले पदार्थ का न फेंकना, सभी प्रकृति से स्वस्थ सम्बन्ध एवं सहचर्य के भाव से चल रहा है।

ग्राम की ओर चलो का उद्घोष करता आयोजन: भारत की ग्राम्य संस्कृति के दर्शन हर कौने में देख सकते हैं। भोजन व्यवस्था हो या कला मंच या विचार मंच, एक ही स्वर गूँज रहा है, चलों गाँव की ओर। प्रदर्शनी में इसके व्यवहारिक सूत्रों को सिखा जा सकता है।

युगऋषि के विचार शरीर का प्रत्यक्षीकरण : 3200 से अधिक युगसाहित्य, विराट पुस्तक मेला एवं कंधे पर श्रवणकुमार की तरह गुरुजी के विचार शरीर को लेकर घूमते यहाँ युगऋषि के विचार शरीर की सशक्त उपस्थिति का एहसास करा रहे हैं।

शिक्षा के साथ विद्या का समन्वय: युगऋषि की शिक्षा के साथ विद्या के दर्शन के आधार पर मूल्यपरक शिक्षा का प्रयोग दृ देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की जीवंत प्रदर्शनी आयोजन को चार चांद लगा रही है।

विविधता में एकता के दर्शन: देश के 28 प्राँतों से आए परिजन विविधता में एकता की सतरंगी छटा विखेर रहे हैं, ऐसे लगता है कि जैसे मिनी इंडिया गंगा के तट पर उतर आया हो।

द े व स ं स्क ृ ति विश्वसंस्कृति के दिग्दर्शन : 80 देशों से आ रहे प्रवासी भारतीय एवं विदेशी मेहमान, छठ में कठोर व्रत रखते रुसी नागरिक एवं भारतीय विरासत को अपनाते विदेशी देवसंस्कृति के विश्वसंस्कृति स्वरूप को उजागर कर रहे हैं।

सर्वधर्म समभाव का पोषक : सम्बर्धकदृ यहां हिंदु धर्म के साथ मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, बौद्ध, जैन जैसे विविध धर्मो की भागीदारी सर्वधर्म समभाव के स्वरुप को स्पष्ट करती है।

वायुमंडल एवं वातावरण शोधन का महाप्रयोग: यज्ञ के माध्यम से हो रहा महाप्रयोग वायुमंडल का शोधन करेगा, वहीं दुष्प्रवृति उन्मूलन एवं सदगुणों के रोपण व सम्वर्धन का भी एक महाअनुष्ठान है।

मानव को देवमानव बनाने की प्रयोगशाला : निश्चित रुप से गंगा के पावन तट पर इतनी विशेषताओं के साथ सम्पन्न हो रहे इसके विविध कार्यक्रम जैसे एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला का निर्माण कर चुके हैं, जिसमें भागीदार होने वाला हर प्रतिभागी रुपाँतरण की एक ऐसी प्रक्रिया से गुजरने वाला है जिसका अनुभव उसको वह सबकुछ देगा कि वह कह उठे : न भूतो, न भविष्यति।

सात आश्चर्यों के बारे में सभी सुनते है, देखते है... लेकिन हरिद्वार शहर में आजकल एक नया आश्चर्य देखने को मिल रहा है। यह आश्चर्य है वेद तपोनिष्ठ प. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मशताब्दी का कार्यक्रम, जिसकी कि विशालता एवं विराटता को देखकर लोग स्वयं ही इसे गायत्री महाकुंभ की संज्ञा देने लगे है।

सप्तद्वीपों में समाए सात महाद्वीप

गौरीशंकर द्वीप

बैरागी द्वीप

सूर्य के रथ के सात घोड़े जब सात रंगों के प्रकाश को सात तलों तक(अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल) खींचकर लाते हैं तब से शुरु होती है यहाँ के सात द्वीपों (गौरीशंकर, बैरागी, चण्डी, लालजीवाला, टूरिस्ट प्लेस, रोडी बेलवाला एवं पंतद्वीप) में बसे सात समुन्दर पार से आए हुए सात महाद्वीपों के लोगों की अद्भुत दिनचर्या...। सात लोकों (भू, भुवः, स्वः, महः, जन, तप और सत्य) से अनूठे इस पवित्र कार्यक्रम स्थल पर सात ऋषियों (मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, केतु, पौलस्त्य एवं वशिष्ठ) के स्नेहवर्षण में लोग सात स्नानों (मंत्र स्नान, भौम, अग्नि, वायव्य, दिव्य, करुण, मानसिक) को महसूस कर रहे हैं और धन्य हो रहे हैं।

पंत द्वीप

सातों द्वीपों की अपनी खासियत है जिसके कारण किसी को भी न तो किसी प्रकार की असुविधा हो रही है और न ही किसी को अपने क्षेत्रों से दूरी का एहसास भर हो रहा है। सात महाद्वीपों को तो किसी देश की सरकार आपस में नहीं जोड़ सकी, लेकिन सातों महाद्वीपों से आकर इन सात द्वीपों में बसे लोगों के दिल जिस प्रकार जुड़े हुए है, उसी प्रकार ये सातों द्वीप भी पाँच पुलों के माध्यम से एक-दूसरे से जोड़े गए हैं। ये पुल यहाँ के कार्यकर्त्ताओं द्वारा बनाए गए हैं।

चंडी द्वीप

गौरीशंकर द्वीप को चार भागों में विभाजित किया गया है जिसमें छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, नेपाल, पं.बंगाल व आंशिक रूप से झारखण्ड के लोगों को ठहराया गया है। इस द्वीप में दो भोजनालय हैं एवं तीनों पैथियों (होमोयोपैथी, एलोपैथी व आयुर्वेद) की चिकित्सा व्यवस्था है। यहाँ पर एक मंच की व्यवस्था है, जिस पर प्रतिदिन शाम को कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी होती है व कलाकार अपने अंदर छुपी प्रतिभाओं की प्रस्तुति करते हैं।

चण्डी द्वीप एक छोटा द्वीप है जिस पर संत नामदेव नगर बसाया गया है। इस द्वीप की यह खासियत है कि यहाँ पर मात्र रहने भर की व्यवस्था है एवं नित्यकर्म तक के लिए यहाँ के वासियों को दूसरे द्वीपों पर जाना पड़ता है फिर भी लोग सहर्ष यहाँ पर रह रहे हैं एवं किसी प्रकार की शिकायत या भेदभाव की भावना इनके दिल को छू भी नहीं सकी है।

बैरागी द्वीप में राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, एन सी आर, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक व केरल के लोग बसे हुए है। यहाँ के लोगों की विविधता के जैसी ही विविधता यहाँ के भोजनालय में भी है जहाँ पर इनकी संस्कृति को मेल खाते हुए पकवान बनाये जाते हैं। दक्षिण भारत से आकर यहाँ रुके एक स्वयंसेवी ने बताया कि अगर भाषा का व्यवधान नहीं होता तो सारे द्वीप दक्षिण भारतीयों से ही भर जाते।

लालजीवाला द्वीप सबसे महत्वपूर्ण द्वीप है जिसमें यज्ञनगर एवं गुरुदेव नगर बसाए गए हैं। सभी अतिविशिष्ट लोगों की यहाँ रुकने की व्यवस्था है एवं इंजीनियर भी यहीं रोके गए हैं। नौ तरीके की आकृतियों में बने 1551 यज्ञकुंड यहीं स्थापित हैं एवं यहीं से मूल कार्यक्रम को संचालित होना है।

टूरिस्ट प्लेस द्वीप इस मामले में महत्त्वपूर्ण है कि यहाँ पर असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और भूटान के स्वयंसेवियों की आवास की व्यवस्था है, जिनको कि उनकी अलग संस्कृति के चलते अक्सर अपने देश में ही विदेशी समझा जाता है। तीन नवंबर के दिन इनके द्वारा गौरीशंकर द्वीप तक निकाली गई प्रभात फेरी देखने लायक थी जिसमें कि वे अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी प्रस्तुत कर रहे थे।

रोड़ीबेलवाला द्वीप सभी अतिथियों के आकर्षण को केन्द्र बिन्दु है। यहाँ पर विचार मंच, कला मंच, प्रदर्शनी, पुस्तकालय, मीडिया सेंटर आदि महत्वपूर्ण स्थल हैं जिन पर रोजाना अतिथियों को लंबी कतारों में लगे हुए देखा जा सकता है। बीच में एक बड़े स्क्रीन पर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संदेश वीडियो के माध्यम से प्रसारित किए जा रहे हैं जिससे कि चलते-फिरते भी स्वयंसेवक लाभांवित हो रहे हैं।

रोडी बेलवाला

पंतद्वीप नगर को अपर एवं लोअर भागों में बांटा गया है जिसमें अपर भाग में विदेशी मेहमानों के रुकने की विशेष व्यवस्था स्विस टेंटों में की गई है। गौरतलब है कि 90 फीसदी विदेशियों ने होटलों में रुकने के बजाए टेंटो में रुकने को प्राथमिकता दी है। लोअर भाग में उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र व गोवा के लोग रह रहे हैं जो कि प्रतिदिन शाम को सत्संग व प्रज्ञागीतों के माध्यम से अपने समय का सदुपयोग कर रहे हैं।

टूरिस्ट प्लेस द्वीप

इन सातों द्वीपों पर सामान्य रूप से सुरक्षा, स्वच्छता, जलापूर्ति, भोजन-आवास आदि आवश्यक व्यवस्था तो है ही इनके अलावा खास बात व्यवस्थाओं में लगे हुए स्वयंसेवक का निष्काम सेवाभाव से कार्य करना कम महत्वपूर्ण नहीं है। बड़े-बड़े अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील व अन्य पेशेवर अपने-अपने कार्यालयों से छुट्टी लेकर यहाँ पर आए हुए है एवं समयदान दे रहे हैं। निजी कंपनियों के जिन लोगों को छुट्टी मिलने में अड़चन हुई वे अपनी नौकरियों से त्यागपत्र देकर भी यहाँ पर खिंचे चले आए हैं। कई विद्यार्थियों ने भी इस कार्यक्रम के प्रत्यक्षदर्शी बनने के लिए अपनी विभिन्न परीक्षाएँ छोड़ दी हैं। इन सभी कार्यकर्त्ताओं का जोश देखते ही बनता है व उनके इसी जोश व उल्लास के चलते यह कार्यक्रम आठवें आश्चर्य से कम वास्तव में नहीं है।

लालजीवाला

अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करती महाकुंभ की जलकल व्यवस्था

जल ही जीवन है। इसके बिना जीवन की कल्पना कर पाना मुश्किल है। इसकी एक बूंद न मिल पाए तो मानव जीवन के अस्तित्व पर खतरा आ जाता है। इसलिए जल का सही नियोजन अति आवश्यक है। किसी महोत्सव और बड़े आयोजन में तो जलव्यवस्था का समुचित नियोजन एक टेढ़ी खीर होता है। जिसमें सरकारी महकमे तो पूरी तरह से असफल दिखाई देते हैं। लेकिन जहां बात श्रद्धा और विश्वास की आए तो वहां कार्य की प्रकृति और प्रगति बढ़ती दिखाई देती है।

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ आचार्य श्रीराम शर्मा की जन्म शताब्दी की तैयारियां बड़े जोरों पर चल रही हैं। जन्म शताब्दी महोत्सव के लिए बसाए गए सभी नगरों में जल की व्यवस्था को अद्भुत तरीके से किया गया है। यहां देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं। कुल मिलाकर लगभग 55 से 60 लाख लोगों के जन्मशताब्दी समारोह में शामिल होने की संभावना है। इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित जनसमुदाय को रहने से लेकर भोजन, पानी, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न विभाग बनाए गए हैं। इन सभी विभागों का कार्य आगन्तुकों को अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

जल वितरण की व्यवस्था प्रत्येक नगर में संस्था द्वारा ही की जा रही है। केवल पंतदीप नगर को छोड़ दिया जाए, जहां पर जल संस्थान की ओर से जलापूर्ति की व्यवस्था की जा रही है। जलापूर्ति व्यवस्था को देख रहे श्री जयसिंह जूनियर इंजीनियर (राजस्थान) ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति पर औसतन 50 लीटर के हिसाब से जलव्यवस्था की गई है। इसके लिए 11 खुले कुएं और 13 बोरवेल कुल 24 जलापूर्ति के स्त्रोतों का प्रयोग किया जा रहा है। यहां का जल लैब से जांच के बाद प्रयोग में लाया जा रहा है। जलस्त्रोतों की शुद्धता के लिए वहां की सफाई की गई और जल पीने योग्य बनाने के लिए अन्य रासायनिक अभिक्रियाओं जैसे क्लोरिफिक्रेशन, ब्लीचिंग और फिल्टरेशन का प्रयोग किया जा रहा है। जलापूर्ति को व्यवस्थित तरीके से लोगों तक पहुंचाने के लिए 10 हजार टोंटियां व 500 टंकियां लगायी गई हैं।

जलू की व्यवस्था सभी के लिए समान रूप से की गई है। बाहर से आ रहे विदेशी लोगों के लिए गरम और ठंडे जल की व्यवस्था की गई है। यदि इस महोत्सव की जलापूर्ति व्यवस्था की तुलना किसी सरकार पोषित आयोजन से की जाए तो वहां के खर्चे की केवल 5 से 10 प्रतिशत लागत पर यहां पूरी व्यवस्था की गई है। इस जलव्यवस्था में प्रयुक्त सभी उपकरण जैसे टंकियां, टोटियां, पाइप आदि सभी उच्च गुणवत्तायुक्त हैं। सम्पूर्ण जलापूर्ति व्यवस्था राजस्थान जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी संस्थान में जूनियर इंजीनियर पद पर कार्यरत श्री जयसिंह की देखरेख में चल रही है।

उनकी योजना है कि महोत्सव में आने वाले प्रत्येक आगंतुक श्रद्धालु को जलापूर्ति की समस्या न हो। लेकिन आने वाली भीड़ का भी ये कर्त्तव्य बनता है कि जल का उचित उपयोग करे। यदि समुचित मात्रा में जल मिल रहा है, तो उसे बर्बाद न करे, क्योंकि इससे गंदगी की और जल निकासी की व्यवस्था में गड़बड़ियां हो सकती है। और हम सभी का कर्त्तव्य बनता है कि भविष्य के लिए जल की अमूल्य बूंदों को बचाकर रखें।

हर तूफान से जूझने को तैयार स्वयंसेवी सुरक्षाकर्मी

नवम्बर के प्रथम पखवाड़े देव प्रबोधनी एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा के जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में होने वाले विशाल आयोजन में सात महाद्वीपों से 50 लाख श्रद्धालु धर्मनगरी हरिद्वार में युगऋषि को श्रद्धा सुमन अर्पित करने आ रहे हैं। कार्यक्रम के विशेष अतिथि के रूप में तिब्बती धर्मगुरू दलाईलामा, सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे, लोकसभाध्यक्ष मीरा कुमार आदि पधार रहें हैं। इस आयोजन में देश-विदेश से आ रहे श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रखी गयी है।

व्यापक सुरक्षा व्यवस्था के लिए 30 हजार स्वयंसेवी सुरक्षाकर्मी नियुक्त किए जा रहे हैं। जिसमें आधी संख्या महिलाओं की है। सुरक्षाकर्मी हर आने-जाने वाले लोगों पर विशेष निगरानी रखेंगे। सुरक्षाकर्मी मिशन के मानक पीले वस्त्र में होंगें। इन्हें विशेष पहचान पत्र दिया जा रहा है, जिससे उनकी पहचान सुनिश्चित की जा सके। सुरक्षाकर्मियों को विशेष प्रशिक्षण मिशन से जुड़े रिटायर्ड प्रशासनिक अधिकारियों की निगरानी में दिया जा रहा है, ताकि किसी असामाजिक घटना को अंजाम देने से रोका जा सके। आपातकालीन परिस्थिति के लिए (एस टी एफ) स्पेशल प्रोटेक्शन फेर्स भी तैनात किया गया है। गायत्री परिवार प्रमुख डॉ0 प्रणव पण्ड्या ने बताया कि राज्य सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त है, पर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर हम आत्मनिर्भर हैं।

कुंभनगर में देश-विदेश से आ रहे श्रद्धालुओं के रहने के लिए 24 नगर बसाये गये हैं। पूरा आयोजन स्थल 50 वर्ग किलोमीटर में फैला है। इतने विशाल क्षेत्र के सुरक्षा के लिए सुरक्षाकर्मियों को क्षेत्र विशेष में आरक्षित कर दिया गया है। सुरक्षाकर्मी हर आने वाले श्रद्धालु के पास वोटर पहचान पत्र या कोई सरकारी मान्यता प्राप्त पहचान पत्र जांच कर ही आगे बढ़ने की अनुमति दे रहे हैं। पूरे क्षेत्र में चप्पे-चप्पे पर खुफिया विभाग के अलावा कार्यक्रम के लिए विशेष रूप से हर मोर्चे पर नजर रखने के लिए 300 गुप्तचरों को तैनात किया जा रहा है। किसी असामाजिक घटना को अंजाम देते पकड़े गये लोगों को सुधार गृह में भेज दिया जायेगा। विशेष जांच के लिए सतर्कता विभाग, बम निरोधक दस्ता, डॉग स्क्वॉड, घुड़सवार पुलिस तैनात रहेंगी तथा मेटल डिटेक्टर टेस्ट व्यवस्था भी है।

शताब्दी समारोह में सुरक्षा में किसी तरह की चूक न हो इसके लिए पूरे क्षेत्र में सुरक्षा के कड़े प्रबंध रहेंगे। असामाजिक तत्वों से निपटने के लिए महिलाओं की प्रज्ञा ब्रिगेड बनाई गई है। इसमें गायत्री परिवार की 108 महिलाओं को रखा गया है। इसके लिए बकायदा प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। उन्हें आयोजन के दौरान विभिन्न स्थानों पर तैनात किया जाएगा। वह गुप्त ढंग से अपने काम को अंजाम देंगी।

सुरक्षाकर्मियों के मध्य आपसी संवाद स्थापित करने के लिए मोबाइल, वायर लेस एवं वॉकी टॉकी की भी प्रर्याप्त व्यवस्था है। जगह-जगह पर राज्य सरकार की पुलिस चौकी होगी पार्किंग भी बनाई गयी है। हर पार्किंग पर ट्रैफिक पुलिस कर्मी तैनात रहेंगे। जो यातायात, एवं अनावश्यक भीड़ पर नियंत्रण रखेगी। हर नगर में भूले-भटके लोगों के लिए एक स्थाई केन्द्र व्यवस्था होगी जहां से उन्हें सुनिश्चित स्थल तक पहुंचाने का पूरा प्रयास किया जायेगा। इस प्रकार आयोजन को अंजाम तक पहुंचाने के लिए हर स्तर पर सुरक्षा को मुख्य बिन्दु मानते हुए गायत्री कुभनगर को पूरी तरह सुरक्षित किया गया है।

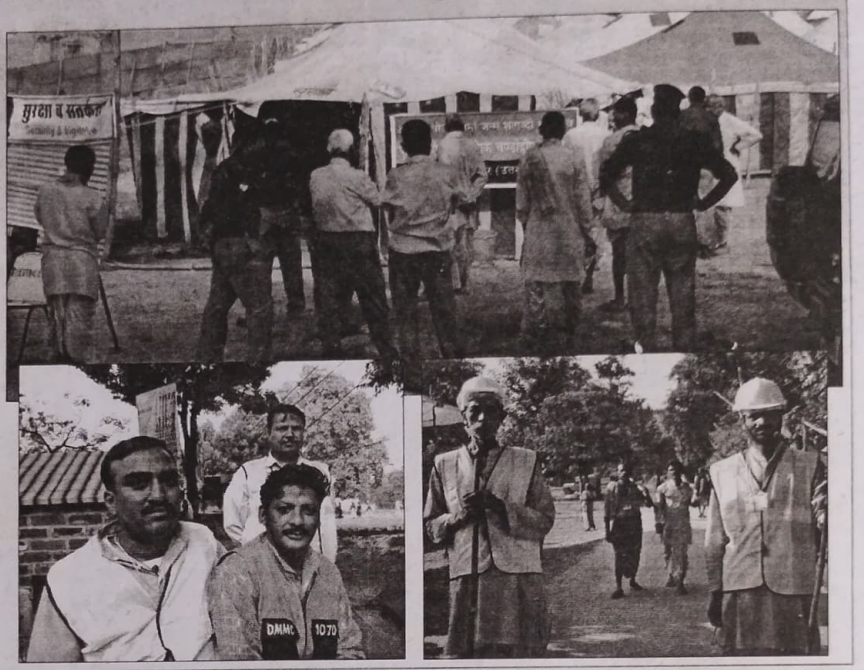

परों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है...

किसी ने ठीक ही कहा है- परों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है...। ये बात चरितार्थ हुई आचार्य श्रीराम शर्मा के जन्मशताब्दी की तैयारियों के दौरान गंगा नदी के ऊपर मात्र 13 दिनों में 815 फीट के पुल के निर्माण के दौरान जिसको कि विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयंसेवकों की दृढ़ इच्छा शक्ति के सहारे बनाया गया।

असल में शुरुआत में जब इंजीनियर पुल निर्माण हेतु निश्चित स्थान पर आए तो उनको पुल निर्माण करना बेहद कठिन लगा क्योंकि तब न केवल गंगा नदी का प्रवाह बहुत तेज था बल्कि गहराई भी बहुत ज्यादा थी। पुल निर्माण के लिए आवश्यक नपाई का कार्य बहुत मुश्किल था। तैराकों की मदद से भी ये काम संभव नहीं था। उन्होंने सेतु निगम के इंजीनियरों की मदद भी लेनी चाही लेकिन पानी का बहाव देखकर उन्होंने भी अपने पैर पीछे हटा लिए। लेकिन कार्यक्रम के पुल

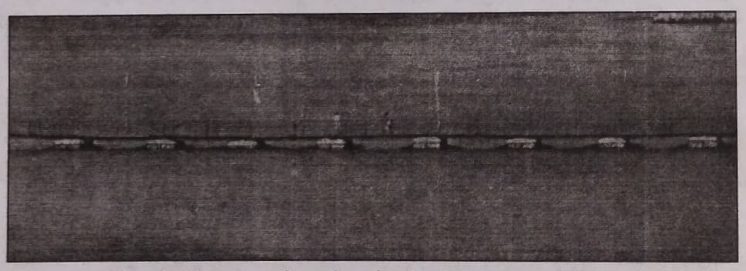

निर्माण का कार्य देख रहे इंजीनियर महाकालेश्वर व हरिमोहन गुप्ता ने बताया कि उन्होंने हार नहीं मानी और गुरु जी का नाम लेकर इस पुल को हर हालत में गायत्री महाकुंभ से पहले पूरा करने का संकल्प ले लिया।

उन्होंने कहा कि हमने लोहे के जाल के बक्से बनाकर उनमें गंगा नदी से पत्थर भरे फिर इन बक्सों की मदद से 12 से 15 फीट लम्बे गार्डर रखे। उन पर लकड़ी के पाँच इंच मोटे स्लीपर कसे और 815 फीट लंबा पुल तैयार कर दिया। इस कार्य में लगभग 800 स्वयंसेवकों ने श्रमदान दिया। पुल का नाम श्रीराम सेतु रखा गया है।

सेतु निगम के इंजीनियर राजेश चौधरी ने बताया कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद 13 दिन में पुल का निर्माण आश्चर्यजनक है। श्रीराम सेतु लालजीवाला नगर से गौरीशंकर क्षेत्र के चैतन्य महाप्रभु नगर, संत कबीरदास नगर, संत रैदास नगर, संत सूरदास नगर, रामकृष्ण परमहंस नगर आदि को आपस में जोड़ता है। गायत्री महाकुंभ के लिए बसे 24 नगरों को आपस में जोड़ने के लिए यहाँ कुल पाँच पुलों का निर्माण किया गया है।

कर दिया असंभव को भी संभव

मन में जब कुछ कर गुजरने की ललक हो तो राह की मुश्किलें अपने आप ही आसान हो जाती हैं।यदि श्रेष्ठ कार्य करने का संकल्प एक बार लिया जाए तो जाति, धर्म और उम्र का कोई बंधन इसके आड़े नहीं आता। कार्य के प्रति समर्पण, मन में उत्साह और उमंग लिए व्यक्ति पूरी ईमानदारी से किसी कार्य में लग जाए तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है। इसी बात को सच कर दिखाया हैं, 70 वर्षीय रिटायर्ड बीडीओ कालीचरण और उनके साथियों ने। उम्र के लगभग 60 वर्ष पूरे कर चुके इन लोगों में अभी भी युवाओं जैसा जोश बरकरार है। समाज में जागरूकता और संस्कार देने को तत्पर इन लोगों के जज्बे के आगे उम्र की सारी सीमाए टूटती हुई नजर आती हैं।

मुज्जफरनगर के छोटे से कस्बें में रहने वाले इन साथियों के विचार और उद्देश्य बहुत बड़े है।तभी तो उम्र के उस पड़ाव पर जहां लोग रिटायर होने के बाद अपने परिवार के साथ रहना पसंद करते है।वहीं ये लोग अपने अनुभवों से समाज को नयी दिशा देने का काम कर रहे हैं। इनसे ये पूछने पर कि उम्र के इस पड़ाव पर वो युवाओं जैसा कार्य कैसे कर पाते हैं।इनका कहना है कि उम्र से कोई युवा नहीं होता है जिसके भीतर सृजनात्मक दिशा में काम करने का जोश हमेशा उमड़ता रहता है वही युवा है।60 वर्ष का जीवन पूरा करने के बाद भी हमारे अंदर आज भी युवाओं जैसा उत्साह और उमंग बरकरार है।

कालीचरण , मास्टर गुरू प्रकाश, सतीश तायल, निरंकार देव शर्मा व 50 वर्षीय कमलेश देवी उन वृध्दजनों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं जो सोचते है कि इस अवस्था में हम दूसरों पर आश्रित हैं, हम स्वयं कुछ नहीं कर सकते हैं। ये लोग घर घर जाकर अपने गुरू पं0 श्रीराम शर्मा के साहित्य व उनके विचारों से लोगों की समस्याओं का समाधान करते हैं। घरों में यज्ञ व संस्कार के माध्यम से अपनी संस्कृति के मूल्यों को जिंदा रखने का महत्वपूर्ण प्रयास ये लोग कर रहे हैं।जीवन के अपने अनुभव के माध्यम से युवाओं को भी मार्गदर्शन देते हैं व सही कार्य के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं।

अपने गुरू युगऋषि पं0 श्रीरामशर्मा की जन्मशताब्दी महोत्सव में ये लोग भोजनालय की व्यवस्था सम्भाल रहे हैं। लोगों को लाईन में लगाकर व भोजनालय का वातावरण प्रेमपूर्वक बना कर हजारों लोगों को भोजन करा रहे हैं।

गायत्री महाकुंभ झलकियां

स्वच्छता की पेश कर रहे अनूठी मिसाल

जन्म शताब्दी महोत्सव की तैयारियां अपने अंतिम दौर में है। गायत्री कुंभ का आयोजन स्थल गंगा नदी के तट पर करीब 50 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है। इस महोत्सव में लगभग 20 देशो से 50 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इतनी बड़ी संख्या में ठहरने वाली जनता के लिये 24 नगर बसाये गये हैं। जिसमें स्वच्छता का विशेष ध्यान दिया गया है। इनमें 12 हजार शौचालयों की व्यवस्था की गयी है। इनमें पानी की भी समुचित व्यवस्था है। शौचालयों को सीधे सीवर लाइन से जोड़ा गया है। मशीनों के प्रयोग से गंदगी को शहर से दूर डाला जायेगा। इसके अलावा बायोटेक्नोलॉजी का प्रयोग भी सेनिटेशन में हो रहा है। कई कीटनाशक रसायनों का प्रयोग शौचालयों और आस-पास के क्षेत्रों में किया जा रहा है। सेनिटेशन की इस व्यवस्था में गंगा, पर्यावरण एवं आने वाली जनता का विशेष ध्यान रखा गया है।

यदि बीते वर्ष महाकुंभ की बात की जाये तो केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के सहयोग के बाद भी स्वच्छता की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया था। लेकिन पं श्रीराम शर्मा आचार्य जी के जन्मशताब्दी महोत्सव में स्वच्छता और शौचालय संबंधी व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

स्वयंसेवकों को आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्मशताब्दी कार्यक्रम में भाग लेने वालों को न केवल आध्यात्मिक लाभ मिल रहा है बल्कि व्यावहारिक जीवनोपयोगी भी बहुत सी बातें सीखने को मिल रही हैं। इन्हीं में से एक है आपदा प्रबंधन का बहुपयोगी प्रशिक्षण। उत्तराखंड शासन के सहयोग से लगाई गई प्रर्दशनी के माध्यम से लोगों को बताया जा रहा है कि कैसे लगी हुई आग से बचा जाए, पानी में डूब रहे व्यक्ति को कैसे बचाया जाए, सड़क हादसे में घायल व्यक्ति का प्राथमिक उपचार कैसे किया जाए, सर्पदंश के शिकार व्यक्ति की कैसे मदद की जाए आदि। उदाहरणस्वरुप यदि सर्पदंश का घाव गोलाकार है तो साँप जहरीला नहीं होगा जबकि अंग्रेजी के अक्षर 'वी' के आकार का घाव होने का मतलब है कि जहरीले साँप ने काटा है। सर्पदंश के शिकार व्यक्ति की आँखे बंद नहीं होने देनी चाहिए, उसके दिमाग का काम करते रहना आवश्यक है।

सावधान युग बदल रहा है!

जिस बदलाव की बात हम सदियों से करते आ रहे थे वह बदलाव हो चुका है कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। शताब्दी पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने एक विचार दिया कि हम युग को बदल देंगे क्योंकि परम चेतना इसके लिए संकल्प बद्ध है। ये बात और ज्यादा पुष्ट तब हो गयी जब उन्होंने अपनी पुस्तक इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण में कह दी कि यह सदी अपने ढ़ंग की समग्र क्रांति को साथ लेकर दौड़ी आ रही है। उसमें संसार का आनंद और उल्लास से भरा नव सृजन होने वाला है। अवांछनियताओं का दुर्ग ढहने वाला है। इस भवितव्यता में सहयोगी बनकर समस्त संसार का भला हो जायेगा।

जरा सोचें

महाकाल के ब्रह्म दंड से बदल चला सब कुछ

एक प्रज्ञागीत हमेशा से यही नसीयत देता आ रहा है- *बदलेगी-बदलेगी निश्चय ही दुनिया बदलेगी। आज नहीं तो कल यह दुनिया बदलेगी।* यह संकल्पना सत्य और अटल है कि दुनिया अवश्य ही बदलेगी। महापुरुषों का जन्म धरती पर विशेष कारण से होता है, वे धरती पर सृजेता बनकर आते हैं और अपने कार्यों, व्यक्तित्व के माध्यम से जीने के मंत्र देकर चले जाते हैं। जिस कारण दुनिया उन्हे हमेशा याद रखती है। ऐसे ही एक महापुरूष, संत, तपस्वी सन् 1911 में आवलखेड़ा में जन्मे और अपने 80 साल के जीवनकाल में उन्होंने मानवता के उत्थान के लिए अविस्मरणीय कार्य किये। आज उनके जन्म के 100 साल बाद उनकी जन्मशताब्दी मनाने की पावन घड़ी आ गई है, जिसके मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के कोने-कोने तक गुरूवर के विचारों को फैलाना है। आखिर 3200 पुस्तकें लिखने वाला व्यक्तित्व सामान्य नहीं होगा, अपने जीवन काल में अखण्ड ज्योति पत्रिका प्रभावी लेखों के माध्यम से समाज को दिशा दी, जिसके आज 10 लाख से अधिक पाठक हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार का निर्माण किया और मानवता में देवत्व को जगाने के लिए विचार क्रान्ति अभियान चलाया जिससे युग निर्माण योजना के दिव्य स्वप्न को देखा। वही वह शक्ति हैं जो वक्त को बदलने को तैयार है।

जिस प्रकार व्यक्ति को अपने किये का परिणाम भोगना पड़ता है, ठीक उसी तरह बड़ी शक्तियां और जातियां भी सदा से अपने भले बुने कार्यों का परिणाम सहती आयी हैं। महाकाल की भूमिका इसीलिए सर्वोपरी कही जाती है। जो समस्त प्रत्यावर्तन की प्रक्रिया का नियोजन करता है। महाकाल से अर्थ समय सीमा से परे एक ऐसी अदृश्य-प्रचण्ड सत्ता जो सृष्टि का सुसंचालन करती है। दण्ड-व्यवस्था का निर्धारण करती है एवं अराजकता, अनुशासनहीनता होने पर अपना सुदर्शन चक्र चलाती है।

महाकाल का दण्ड अब इतना तेज हो गया है कि वह गलती को स्वीकार नहीं करेगा। समय के साथ उसका प्रभाव भी बढ़ता चला जा रहा है। आज किसी भी तंत्र पर नजर दौड़ाएं तो हमें यही प्रतीत होगा कि महाकाल के दण्डे का डर सर्वव्याप्त है। क्योंकि यह संधिकाल का समय है जिसमें सूक्ष्म, स्थूल और कारण सभी शक्तियां जागृत हो गयी हैं।

गुरुवर की युग निर्माण योजना का प्रथम लक्ष्य जन जागरण है और अब अगला कदम विभूतियों को झकझोरना है और उन्हें उलझी हुई स्थिति से निकालना है। गुरुवर हमेशा कहते थे कि समय उलटे को उलट कर सीधा कर देगा। वास्तव में ऐसा ही हो रहा है।

अपना बचपन गुरुदेव की गोदी में बिताने वाले डॉ. चिन्मय पण्ड्या की कलम से जानें युगऋषि का दिव्य व्यक्तित्व एवं जन्मशताब्दी पर सृजन सैनिकों के उत्तरदायित्व की दिशा धारा।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या

जन्मशताब्दी में सृजन सैनिकों की जिम्मेदारी

समाज, शासन एवं विश्व व्यवस्था में सुनियोजन एवं विकास की दृष्टि से परिवर्तन सदा होते रहते हैं। परंतु जब इनमें अराजकता, अव्यवस्था तथा अवांछनीयता सामान्य प्रक्रमों के दायरे से बाहर हो जाती है, तो व्यापक बदलाव वाली क्रान्तियाँ जन्म लेती हैं। ये आँधी-तूफानों की तरह आती हैं, पुराने ढाँचे को ध्वस्त कर, अवांछनीयता को बहा ले जाती हैं और नव निर्माण की रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं।

आज समाज का ढाँचा उस कागज के पुतले की तरह है, जो बाहर से धन और विज्ञान की वृद्धि के कारण आकर्षक तो नजर आता है, पर अंदर से असंयम, अनाचार और अविवेक के कारण खोखला हो चुका है। पर्यावरण का बिगड़ता संतुलन, आर्थिक विपन्नताएँ और समाज में फैला आतंकवाद, विकृतियों के उस चरम का द्योतक है, जिसे देख ऐसा प्रतीत होता है मानो मनुष्य जाति सामूहिक आत्महत्या करने को चल पड़ी हो, युग संकट की इस विषम घड़ी में एक नये परिवर्तन एक नयी क्रांति की माँग उठ रही है।

अब तक की क्रान्तियों का मूल उद्देश्य बाहरी बदलाव ही रहा। इन्होंने तात्कालिक समाधान तो प्रस्तुत किये परंतु समस्याओं के मूल कारण अछूते ही रहे। वर्तमान समस्याओं का निराकरण, जन चेतना में बाहरी या व्यवस्था परिवर्तन से नहीं अपितु जनमानस के चिन्तन और चरित्र के आमूलचूल परिष्कार से ही संभव है। हम परम पूज्य गुरुदेव को उसी क्रांति के उद्घोषक, युगद्रष्टा के रूप में जानते हैं, और उस क्रांति को विचारक्रांति अभियान या युगनिर्माण योजना के नाम से।

परम पूज्य गुरुदेव का जीवन एक ऋषि, प्रचण्ड तपस्वी, दिव्य पुरुष, अवतारी सत्ता का जीवन था और उनके साथ गुजारे गये हर क्षण किसी दैवीय अनुग्रह या सौभाग्य से कम नहीं थे। गहन अध्ययन, अन्वेषण के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने युग संकट का वह समाधान दिया, जो व्यक्ति के चिन्तन और चेतना को दिशा देता हुआ नवसृजन का आधार प्रस्तुत कर सकता है।

उनके ही शब्दों में इसे सुने तो याद आता है 'जब बात भविष्य गढ़ने की आती है तब उसके तीन ही उपाय दीख पड़ते हैं-प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन, अभावों का निराकरण और सदाशयता का अभिवर्धन। समय की इस माँग को विज्ञान तो कदाचित् कितने ही प्रयत्न कर लेने पर भी पूरा न कर सकेगा; पर यह विश्वास किया जा सकता है कि चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का असाधारण मात्रा में अभिवर्धन होगा, तो वे सभी समस्याएँ अनायास ही सुलझती चलेंगी, जिन्हें इन दिनों सर्वनाशी और खण्ड प्रलय जैसी विभीषिकायें माना जा रहा है।'

पूज्य गुरुदेव ने जहाँ गायत्री साधना द्वारा जन-जन को ऋषि संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया वहीं दूसरी ओर अध्यात्म के वैज्ञानिक प्रतिपादन, आत्मज्ञान, व्यक्तित्व विकास, समाज निर्माण तथा नारी जागरण जैसे विषयों पर 3200 से अधिक पुस्तकों के रूप में युग साहित्य की रचना की। गुरुदेव स्वयं कहते थे, 'ये विचार क्रान्ति के बीज हैं। जहाँ भी पहुँचेंगे, धमाका करेंगे। इनमें युग बदलने की ताकत है।'

पूज्यवर के मस्तिष्क से उपजी एवं जन चेतना में बोई गई विचारक्रांति की फसल आज अपना चमत्कारी प्रभाव लहलहाती केसरिया फसल के रूप में दिखा रही है। परम पूज्य गुरुदेव का जीवन उनके विचारों की तरह विराट और उनके चिंतन की तरह व्यापक है। उनकी जन्मशताब्दी पर एकत्रित हम सभी सृजन सैनिकों की यह जिम्मेदारी है कि हमारा जीवन संकल्प की परिणति बने। विचारक्रान्ति के अन्वेषक और हम सब के हृदय साम्राज्य पर राज करने वाले गुरुदेव के लिये इससे कम में कोई श्रद्धांजलि हो भी नहीं सकती।

आपकी पाती

सकरात्मक विचारों को फैलाने में सहायक

परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने कहा था पत्रकारिता को संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए।

देवसंविवि. का पत्रकारिता विभाग का पत्र 'संस्कृति संचार' इसे बखूबी निभा रहा है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार को संस्कृति संचार ने आत्मसात किया है। सकारात्मक समाचारों को जनता तक पहुँचाना तथा विज्ञान और अध्यात्म की वास्तविकता से रुबरु करवाना संस्कृति संचार का प्रमुख लक्ष्य है। संस्कृति संचार का लुकअप बहुत अच्छा है। मैं संस्कृति संचार का नियमित पाठक हूँ। मैं इस पत्र के पूरे टीम को इतने अच्छे प्रयास के लिए बधाई देता हूँ।

-श्री संदीप कुमार, कुलसचिव, देसंविवि, हरिद्वार

पॉजिटिव संदेश दे रहा है पत्र

संस्कृति संचार एक विधेयात्मक पत्र है। आज जिस तरह से पत्रकारिता आम तौर से हो रही है उससे यह हटकर है। वैसे इसमें निकलने वाले सभी कन्टेंट बहुत अच्छे रहते हैं लेकिन युवाओं से सम्बंधित निकलने वाले सभी लेख तन-मन में जोश का संचार कर देते है। इस पत्र का डिजाइन बहुत ही सुन्दर तथा आकर्षक है। आज के समय में मानसिक रोगों की बाढ़ आ गयी है। ऐसे में यह समाचार पत्र अपने पॉजिटिव समाचारों द्वारा लोगों को मानसिक विकारों से दूर कर रहा है।

-श्री आशुतोष साहू, प्राध्यापक, रजिस्ट्रार आफिस, देसंविवि

पूरे देश में पहुंचाया जाए ये पत्र

संस्कृति संचार मे निकलने वाले लेख पाठकों के अन्दर चेतना का विस्तार करते है उनके अंदर जिंदादिली का संचार करते हैं इसमें प्रकाशित कविता अंतर्मन को झंकृत कर जाती है। इसमें लिखने वाले छात्र बहुत प्रतिभाशाली हैं, इस तरह के पत्र पूरे देश में निकलने चाहिए। गुरुदेव के बारे में जो भी सामाचार इस पत्र में निकलती है वह बहुत ही आकर्षक व मन को छू जाने वाली होती है। मैं चाहता हूँ कि युवाओं को झकझोरने वाली यह पत्रिका पूरे देश में पहुंचायी जाए ताकि अधिक से अधिक लोग भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्व जान व समझ सकें। यह पत्र युवाओं को को नई दिशा प्रदान करने की दिशा में अहम रोल अदा कर रहा है।

-संदीप भारती, राजस्थान

मन को अति भावे संस्कृति संचार

संस्कृति संचार एक ऐसा अखबार है जिसमें देवसंस्कृति विश्वविद्यालय से संबंधित सारी गतिविधियों की जानकारी मिल जाती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सभी को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मौका मिलता है। चाहें वह विद्यार्थी हो या स्टाफ का सदस्य। यह विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग का एक अनूठा प्रयास है। जिसमें जागरुकता के साथ-साथ ज्ञान भी मिलता है। इसमें विभिन्न विषयों पर रोचक जानकारियां मिलती हैं। जोकि आकर्षण का मुख्य बिंदु है।

नेहा सिंह, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

मिलती है संपूर्णता की झलक

यह अखबार बहुत है अच्छा है। जैसा कि इसका नाम है, वैसा ही इसका काम भी है। इसमें देव संस्कृति की एक सम्पूर्ण झलक विस्तृत रुप से देखने को मिलती है। विश्वविद्यालय के साथ मिशन में चल रही गतिविधियों, कार्यों आदि की जानकारी आसानी एक साथ उपलब्ध हो जाती है। इसका मुख्य आकर्षण यह है कि एक विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों की झलक मिलती है। इसका डिजाइन बहुत ही आकर्षक है। इसके साथ ही इसकी खबरें सकारात्मकता का संचार करती है।

-डॉ. स्नेहलता पाठक, एजुकेशन विभाग

गागर में सागर के समान ज्ञान समेटे

यह पत्र गागर में सागर के सामान अपने भीतर ज्ञान को समेटे हुए है। इसकी खबरों के माध्यम से हमें ज्ञान मिलता है। सकारात्मक पत्रकारिता का अच्छा उदाहरण है संस्कृति संचार। इस अखबार को बनाने में जो टीम कार्यरत है, मैं उसके कार्यों की सराहना करती हूँ। यह पत्र पाठकों से सीधा संवाद करता है, जोकि इसकी मौलिक विशेषता है। इसकी भाषा-शैली बहुत ही रोचक है। इसका डिजाइन बहुत ही मनमोहक है। इसमें देश-विदेश से जुड़ी खबरें आकर्षण का केंद्र होती हैं। जिनसे हमें दुनिया भर की जानकारी मिलती है।

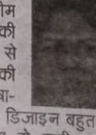

-रश्मि शर्मा, लाइब्रेरी, देसंविवि

युगद्रष्टा, युगपुरुष, युगऋषि युग मनीषी, युग व्यास

युगद्रष्टा, युगपुरुष, युगऋषि, युग मनीषी, युग व्यास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

गायत्री जन-जन को दिलाई, प्रज्ञा के आराधक,
जीवन साधा प्रथम स्वयं का, बने स्वयं युग साधक,
स्वर्णिम जीवन सबका होगा, आएगा मधुमास
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

आर्ष ग्रंथ जितने भी हैं, किया सभी का भाष्य,
पंजोपनिषद् की रचना कर, बने आप युग व्यास,
सरलोत्तम व्याख्या ग्रंथों की, बना दिया इतिहास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

प्यार लुटाया अपना सब पर, विश्व बना परिवार,
श्रेय सभी देते रहते, आप युग के सूत्रधार,
ममता का आँचल रखा सर पर, रहते सबके पास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

सादा जीवन उच्च विचार से, हृदय सभी का जीत,
माँ गायत्री को आधार बनाया, बने आप युग प्रणेता,
दुबुद्धि को जड़ से मिटाया, सद्बुद्धि का हुआ विकास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

युग ज्ञान को किया प्रचारित, वातावरण के शोधक,
होगा आने वाला युग सुन्दर, स्वयं बने युग उद्बोधक,
मैं ही लाऊँगा नवयुग, कहती हर श्वास-प्रश्वास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

संस्कृति को जीवित कर, की प्रेम निर्मल वृष्टि,
संस्कार परिपाटी पोषक, स्वयं आप युगऋषि,
संस्कार शोधक जीवन के, सबको है एहसास,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

युग निर्माण योजना दे दी, आप विश्व के सृष्टा,
आने वाला समय सुखद है, आप स्वयं युग दृष्टा,
सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन होगा, दुष्प्रवृत्ति का विनाश,
अर्पित करते तुमको जीवन, संग श्रद्धा-विश्वास।।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब और श्रद्धेया जीजी के भाव विचार

1 नवम्बर को श्रद्धेय डॉक्टर साहब और श्रद्धेया शैल जीजी द्वारा मीडिया सेंटर का उदघाटन किया गया। डॉक्टर प्रणव पण्ड्या ने पत्रकारों को उद्बोधित करते हुए कहा कि 'परमपूज्य' गुरुदेव का सही स्वरुप पत्रकार का रहा है।

जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका एक जुझारु पत्रकार के रुप में शुरु की और आगे चलकर आध्यात्मिक पत्रिका अखण्ड ज्योति के माध्यम से गायत्री परिवार की स्थापना की और युगनिर्माण आंदोलन का सूत्रपात किया।

प्रखर मनीषी के रुप में गुरुदेव ने पत्रकारिता को विचारक्रांति का सशक्त माध्यम बनाया और जीवन भर इसका निर्वाह करते रहे। सही मायने में वे व्यक्ति नहीं, विचार थे, युग को प्रकाशपूर्ण समाधान देने वाले युगऋषि हैं। उनके सदवाक्य स्टीकर से लेकर पॉकेट साइज पुस्तक एवं वांड़मय में ऐसे विचार भरे हैं, जो किसी के भी जीवन को बदलने में सक्षम हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी के उद्गार : विचारों में बहुत ताकत होती है। कभी परशुराम ने 21 बार आततायियों का शिरोच्छेदन किया थाए उक्ति अतियुक्तिपूर्ण लग सकती है, लेकिन परमपूज्य गुरुदेव ने विचारों के माध्यम से कुविचारों का सर कलम करते हुए विचारक्रांति की अलख जगाई और न जाने कितने लोगों के मानस का परिष्कार किया।

ब्राह्मण विचारों का साधक होता है, जिसका आधार होता है उसका तप और ज्ञान। इन्हीं आधार पर गुरुदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि कहलाए। उनके तप त्याग पूर्ण जीवन एवं प्रेम के वशीभूत होकर कितने ही लोग उनसे जुड़ते गए और उनके प्रखर विचारों के प्रभाव में जीवन का रुपाँतरण होता गया।

आज श्रवण कुमार की तरह कितने ही प्रज्ञा पुत्र-पुत्रियाँ उनके विचार शरीर को कँधे पर लिए जन-जन के बिचार क्रांति की अग्न सुलगा रहे हैं। आशा है कि मीडिया तंत्र के माध्यम से कार्यक्रम के समाचारों के साथ उनके क्रांति के विचार बीजों का भी प्रचार-प्रसार होगा।

शिक्षा के साथ संस्कार एवं स्वावलंबन पर दिया जोर

विचार मंच का उदघाटन समारोह जन्मशताब्दी के दूसरे दिन हुआ जिसमें गायत्री परिवार की प्रमुख आदरणीय शैलबाला पण्डया, देसंविवि कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्डया, एवं शांतिकुंज मनीषी वीरेश्वर उपाध्याय और मुख्य अतिथि खादी ग्रामोद्योग के सीईओ श्री जयशंकर मिश्र मंचासीन थे। उद्घाटन समारोह में बोलते हुए आदरणीय वीरेश्वर उपाध्याय जी ने कहा कि बालकों का पालन ही नहीं निर्माण भी जरूरी है, उन्हे भिक्षाजीवी, नहीं श्रमजीवी बनाना होगा। भारतीय संस्कृति सबसे पुरातन संस्कृति है। हमे इसका गौरव महसूस करना चाहिए जो इसे महसूस नहीं करता वो मुर्दे के समान है।

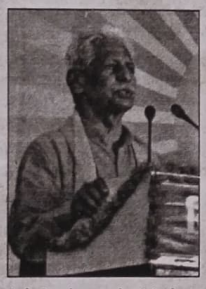

खादी ग्रामोद्योग के प्रमुख कार्यकारी अधिकारी श्री जयशंकर मिश्र ने कहा कि मैं यहां आकर अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि दुनिया वैचारिक क्रान्ति के माध्यम से ही बदलेगी जो आचार्यश्री के बताए मार्ग से ही सम्भव है। भारत को स्वावलम्बी बनाने के लिए उत्तराखण्ड सरकार और खादी ग्रामोद्योग के प्रयास से एक विशाल प्रदर्शनी समारोह में लगायी गयी है जिसके माध्यम से लोंगो को खादी और कुटीर उद्योगों के क्षेत्र मे जागरूकता फैलेगी।

देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि मिशन आचार्यश्री का विचार शरीर है और जो विशेष कार्य के लिए समर्पित है वह है युग निर्माण। उनके सकल्पों और विचारों के प्रभाव से गायत्री परिवार संचालित हो रहा है। हमने देसंविवि को गुरूवर के सपनों के विश्वविद्यालय के रूप में बनाया है जहां शिक्षा के साथ विद्या का समावेश है जो अन्य विश्वविद्यालयों से अनूठा है। इनके सम्मिलित रूप से ही हम युग निर्माण के संकल्प को सफल बना सकते है।

शांतिकुंज अधिष्ठात्री शैलबाला पण्डया ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि हमारा मिशन संवेदना, भाव, श्रद्धा से भरे लोगों से भरा है। गुलाम प्रथा का खात्मा करने वाली भाव क्रान्ति अमेरिका में हेरियस स्टो की रचना टाम बाबा की कुटिया के माध्यम से हुई थी। इससे भी महत्वपूर्ण है विचार क्रांति जो गुरुदेव ने भारत में की।

गुरूकुल कांगडी के कुलपति डॉ. स्वतंत्र कुमार ने कहा कि आचार्य श्री ने अपने तप-त्याग से जो पौधा रौपा था वह एक वट वृक्ष के रुप में समस्त विश्व देख रहा है। हमें आशा है कि इस समारोह से ऐसा प्रवाह पैदा होगा जो विश्व का मार्गदर्शन करेगा ।

देसंविवि के कुलपति डॉ. सुखदेव शर्मा ने कहा कि शिक्षा के मर्म को उदघाटित करते हुए कहा कि यह व्यक्तित्व में अंतर्निहित क्षमताओं के विकास एवं नेतृत्व क्षमता का जागरण है। नौकरी पाने तक सीमित शिक्षा के साथ विद्धा का समावेश होने पर ही जीवन उत्कर्ष का उद्देश्य पूरा हो पाएगा। देव संस्कृति विश्वविद्यालय एक ऐसा ही अनूठा प्रयोग है।

आचार्य श्री के विचारों से मिलेगी संसार को दिशा : प्रदीप जैन

आचार्य श्री के विचार गागर में सागर की तरह हैं। यदि उनमें से दस विचारों को भी अपनाया जाय तो जीवन भर की ऊर्जा हासिल की जा सकती है। उन्होंने संसार को दिशा देने का कार्य किया, जो अपने आप महत्वपूर्ण है। ये भाव उदगार थे जन्मशताब्दी मीडिया सेंटर के उद्घाटन अवसर पर पधारे केंद्रीय ग्रामीण राज्य विकास मंत्री प्रदीप जैन के।

कार्यकताओं के समर्पण भाव को देखकर अभिभूत मंत्री महोदय ने कहा कि यह आचार्य श्री के दिए गए संस्कारों का परिणाम है। आज जहां मनरेगा जैसी बड़ी-बड़ी सरकारी योजनाएं एवं कार्यक्रम भ्रष्ट्राचार एवं लूट का शिकार बन रहे हैं, ऐसे में एक-एक व्यक्ति के सहयोग से चल रहा ऐसा कार्यक्रम एवं अभियान ही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास को सही दिशा दे सकता है। आचार्य श्री ने महिला सशक्तीकरण की दिशा में जो प्रयास किए वह हमेशा याद किए जाएंगे। हमारा यह सौभाग्य कि बुंदेलखंड की जिस जमीन से मैं आया हूं, जहां आचार्य श्री 17 बार पधारे। अपने बचपन को याद करते हुए मंत्री जी ने कहा कि मेरे पिताजी जब रेलवे में ड्राइवर हुआ करते थे, तब वे आचार्य श्री द्वारा रचित साहित्य से सदवाक्यों को निकालकर हम भाई-बहनों को सुनाया करते थे। उन्हीं का परिणाम है कि मैं आज आप सबके समाने हूं। उन्होंने कहा कि गुरुदेव ने व्यक्तित्व निर्माण के माध्यम से समाज निर्माण का स्वप्न देखा, इस कार्यक्रम में वह फलीभूत होता देख रहे हैं।

मंच संचालन करते हुए दिया के प्रमुख केपी दुबे ने बताया कि गायत्री परिवार ने इस पावन अवसर पर 1008 आदर्श गांव तथा 1008 श्रीराम स्मृति उपवनों के निर्माण का संकल्प लिया है, जो ग्रामीण विकास में अभूतपूर्व योगदान देगा। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता डॉ ओपी शर्मा तथा देसंविवि के कुलपति डॉ. एसडी शर्मा, बुंदेलखंड कार्यकर्ता सुरेश चंद्र बघेले, मीडिया प्रभारी दिव्येश व्यास आदि उपस्थित थे।

क्रांति

समस्याओं के चक्रव्यूह में फंसी उलझी ...
तोड़ती इंसानियत को यदि कोई उबार ...
वह है युग मनीषा। युग मनीषियों की विशे...
है कि वह प्रायोगिक आधार पर समस्या...
सम्यक दृष्टि से अवलोकन करती है उनके ...
जाती है और उसके सार्थक समाधान प्रस्तुत ...
युगऋषि का चिंतन अपने जीवन की प्रयोग...
तराशे-परखे गए ऐसे ही प्रखर विचारों का ...
पुँज है जो आज विपुल युगसाहित्य के रुप ...
का प्रखर दिशा बोध कर रहा है। आश्चर्य ...
गुरुदेव कहा करते थे कि मैं व्यक्ति नहीं, ...
और उन्होंने विचारक्रांति को अपने यु...
आंदोलन की धुरी माना। वैचारिक क्रांति को ...
गति देता समारोह का विचार मंच शुरु हो ...
प्रस्तुत है विगत कुछ दिनों में युग मनीषियों ...
मंथन से प्रकट होते नवनीत का सार...

विचारों की त्रिवेणी

विचार ही संकल्प का रुप लेते हैंए इसकी सार्थकता को गायत्री महाकुंभ के तीसरे दिन विचार मंच से बताया गया। यहां गाय, पर्यावरण और संस्कृति की त्रिवेणी से बने विचार प्रवाह ने संकल्प सरिता का रुप लिया।

विषय की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शांतिकुंज के मनीषी वीरेश्वर उपाध्याय ने कहा कि हमारी संस्कृति सबसे अनमोल है। जिसे अपनी संस्कृति के गौरव का अभिमान नहीं हैए वह इंसान पशु के समान है। इसी का भान कराने के लिए शांतिकुंज के माध्यम से भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा और बाल संस्कार शाला का रुप दिया गया। जिसके माध्यम से बच्चों में संस्कृति के प्रति संवेदना का विकास करने की योजना बनाई गई। जो वर्तमान में विशाल रुप अख्तियार कर चुकी है।

उन्होंने कहा कि यदि हमें देश को बचाना है तो गांवों को बचाना होगा। इसके लिए ग्राम तीर्थ योजना का स्वरुप बनाया गया। हमें पूजा को सेवा का रुप देना होगा। इसी आधार पर हमारा राष्ट्र पुन विश्वगुरु बन जाएगा।

प्रथम वक्ता ...
सेंधवा शक्तिपीठ ...
मेवालाल पाटीदार ...
पर प्रकाश ...
हमको पालती है ...
एक गाय के माध्यम ...
पालन पोषण अच्छे ...
सकता है। गाय ...
और अर्थ प्रदान ...
आदर्श गांव ...
उन्होंने बताया कि ...
व्यक्ति के पास 3 ...
माध्यम से यहां ...

कुछ नया कर गुजरने वाला ही है युवा

आज युग पुकारता जाग नौजवान रे क्रांतिकारी गीत के साथ पाँचवे दिन का विचार मंच देश विदेश से आए युवा शक्ति के नाम रहा, जिनको शांतिकुंज के विभिन्न मनीषियों ने संबोधित किया।

सबसे पहले श्री वीरेश्वर उपाध्याय ने युवा शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कुछ नया कर गुजरने का जिसके पास जज्बा है, वहीं युवा है। युवाओं में जोश बहुत है, परन्तु यह जोश जब गलत दिशा में चल पड़ता है, तो वह अनाचार, आतंकवाद, अपराध की विध्वंसक डगर पर चल पड़ता है, और जब सही दिशा में चल पड़े तो फिर सृजन संकल्प के साथ, भगत, आजाद, सुभाष जैसे युवा हमारे सामने दिखाई पड़ने लगते हैं। नदियां बांध तोड़ देती हैं तो बाढ़, विभीषिका और तबाही लाती है, परन्तु जब नहर के द्वार उस जल का सुनियोजन हो जाए तो यही जल चारों तरफ हरियाली लाता है। भारतीय युवाओं ने वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिभा/पुरुषार्थ का परचम फहराया है। देश की आजादी से लेकर आजादी के बाद भी परिवर्तनकारी आंदोलनों में युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं के सामने उसका आदर्श होना चाहिए और ईश्वर के अलावा कोई श्रेष्ठ आदर्श दूसरा कौन हो सकता है। ईश्वर कौन जो उच्च आदर्शों का समुच्चय है, जो सदुणों का भण्डागार है, जो समस्त दिव्य ऐश्वर्य को धारण करता है।

युवाओं इन आदर्शों को धारण कर ही परिवार, समाज, राष्ट्र को समुन्नत व शिखर तक पहुंचाने में अपनी अहम् भूमिका निभा सकता है। अपने समय, श्रम और प्रतिभा को समाज व राष्ट्रहित में लगा सकता है। आप यहां से सभी संकल्प लेकर जाएं।

जिसमें ऊर्जा व उमंग है वही असली युवा है

युवाओं में बहुत जोश है। उनके अंदर युग निर्माण करने की उमंग है। युवा कौन जिसमें ऊर्जा है, उमंग है, कुछ खास कर गुजरने का संकल्प है। हमें युवाओं के बीच गुरुदेव के विचारों को टैबलेट व कैपसूल के रुप में परोसना होगा। परोसने का तरीका आना चाहिए। गुरुदेव ने सब कुछ तैयार कर रखा है, आप सबको परोसना आना चाहिए। ज्ञान को परोसना आना चाहिए। ऊर्जा का संचय करो, उसे नष्ट मत होने दो, उन्हें सृजन में लगाओ। देश के कौने-कौने से आए युवाओं का सम्मान करता हूँ। युवा जो वायू की गति से चले। युवा वो जो हनुमान की तरह अपनी ऊर्जा को प्रभु कार्य में लगाए। आज राम का हनुमान मूर्छित है, उसे जगाने की जरुरत है। युवा वह जो शिष्टता, शालीनता, का पर्याय हो, जो स्वाध्यायशील हो। गुरुदेव 80 वर्ष की अवस्था में भी अपने आपको युवा बना कर रखा। शरीर का धर्म है वृद्ध होना, पर अन्तरंग का जो यौवन है उर्जा, उत्साह, उमंग के रुप में उसे हमेशा बनाए रखना ही वास्तव में युवा होना है।

हम गुरुदेव की जन्मशताब्दी पर गुरुदेव को क्या आहूति दे सकते हैं- व्यक्तिगत स्तर पर अपने देवत्व को विकसित कर, अपने जीवनशैली में परिवर्तन कर, गुरुदेव के अंग अवयव बनकर, जैसा कि गुरुदेव ने कहा है, मैं तुम्हारे अंदर प्रवेश करना चाहता हूँ, तुम मेरे अंदर प्रवेश कर जाओ।

पारिवारिक स्तर पर परिवार में सुसंस्कारिता का वातावरण उत्पन्न कर एवं सामाजिक स्तर पर भ्रष्टाचार में असहयोग कर, सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अभियान चलाकर। साधनात्मक स्तर पर स्वयं को साधना से जोड़कर।

-श्रद्धेय प्रणव पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

संस्कृति संचार विशेषांक

योग, संस्कृति और अध्यात्म की

त्रिवेणी

02 अक्टूबर से 06 अक्टूबर 2011

अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव देसंविवि 2011

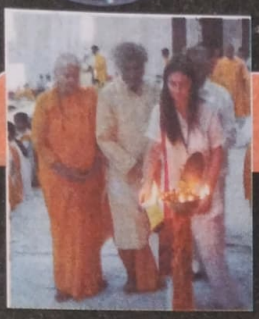

2 से 6 अक्टूबर के बीच देव संस्कृति विवि में योग, संस्कृति एवं अध्यात्म के संगम समन्वय का अद्भुत संगम दिखा, जिसमें भारतीय संस्कृति के गूढ़ पक्षों व इनके वैज्ञानिक, प्रायोगिक एवं दार्शनिक पक्षों को उद्घाटित किया गया। योग को लेकर तमाम तरह के आयोजन यदा-कदा होते रहते हैं, इसी तरह संस्कृति के नाम पर कलाकारों की उछल-कूद एवं भौंडे प्रदर्शन भी चलते रहते हैं व अध्यात्म के नाम पर लम्बे चौड़े प्रवचन एवं कथा गाथाएं भी प्रचलन में हैं, लेकिन इस उत्सव में लीक से हटकर इनकी तीनों के प्रगतिशील एवं समाजोपयोगी स्वरुप को देखकर देश-विदेश से आए अध्यात्म प्रेमी, जिज्ञासु एवं ज्ञानीजन स्वयं को उपकृत व धन्य अनुभव किए।

ऐसा ही आयोजन पिछले वर्ष हरिद्वार महाकुंभ के दौरान अप्रैल माह में आयोजित हुआ था। यह देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का दूसरा अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव था, जो उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग के साथ मिलकर मनाया गया। चार दिन मनाए गया यह महोत्सव कई मायनों में विशेष रहा।

योग व अध्यात्म ही है 'कल्पवृक्ष'

देव सस्कृति विश्वविद्यालय में 2 से 6 अक्टूबर 2011 में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव में विभिन्न विद्वानों, अध्यात्मविदों, योगियों ने देश-विदेश से आये प्रतिभागियों के समक्ष अपने उदगार व्यक्त करते हुए योग व अध्यात्म रूपी इसी कल्पवृक्ष की छाव में बैठने की प्रेरणा प्रदान की :

डॉ. डी. आर कार्तिकेयन, पूर्व निदेशक, सीबीआई : आज विश्व में जनसंहार के लिए हथियारों का जखीरा जमा करने की होड़ सी मची हुई है। धर्म के नाम पर भी लाखों का खून बहा है, सवाल यह है कि क्या विश्व में ऐसी कोई प्रयोगशाला है जहां खून का एक कतरा एक बूंद भी तैयार किया जा सके? यह सिर्फ मानव शरीर रुपी ईश्वरीय प्रयोगशाला में ही संभव है। विज्ञान के साथ यदि अध्यात्म है तो सृजन होता है और विज्ञान को यदि अध्यात्म से अलग दिया जाए तो विध्वंश होता है आज यही हो रहा है। इसलिए वैज्ञानिक अध्यात्मवाद ही एकमात्र समाधान बचता है। इस दिशा में गायत्री परिवार का प्रयास निश्चित ही संपूर्ण विश्व के लिए आशा की उजावल किरण है।

स्वामी सच्चिदानंद जी, भक्तिवेदान्त, जर्मनी : हमारे अतंस का अधंकार, बाह्य अंधकार से ज्यादा खतरनाक है। इसलिए बाहर की अपेक्षा अपने अंदर के अंधकार को दूर करना ज्यादा आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। योग हमारे अंतस के इसी अंधकार को दूर करता है। यह प्रकाश बिजली अथवा किसी अन्य माध्यमों से उत्पन्न प्रकाश नहीं है। जैसे प्रकाश आते ही कमरे से अंधेरा तिरोहित हो जाता है वैसे ही हमारे अंतस में योग का प्रकाश आते ही काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार का अंधेरा समाप्त हो जाता है एवं जीवन में सर्वत्र शांति ही शांति दृष्टिगोचर होने लगती है।

जगदगुरु अमृत सूर्यानंद जी, पूर्तगाल: भारत योग की जन्मभूमि है। अपने योग, अध्यात्म एवं मानवीय मूल्यों के कारण संपूर्ण मानवता के लिए आशा की किरण है। आज को वैश्विक समस्याओं का समाधान भारतीय योग व अध्यात्म ही दे सकता है। इसलिए संपूर्ण विश्व आज भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा हैं। आज मनुष्य में जो चरित्र एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। उसका समाधान सिर्फ अध्यात्म ही हो सकता है।

हरिजय सिंह खालसा, इटली: हमने अपने जीवन में कई युद्ध देखे हैं, विश्वयुद्ध से लेकर 1962 के युद्ध देखे हैं। उसमें हुए व्यापक एवं भीषण जनसंहार को देखा है। लोगों को विलखते तड़पते देखा है। इस तरह की समस्याओं का क्या समाधान हो सकता है? निश्चित रुप से योग व अध्यात्म क्योंकि यही मनुष्य की चेतन को ऊपर उठाकर सही मायने में मनुष्य व देवता बना सकता है।

स्वामी सूर्यानंद सरस्वती, इटली: पश्चिम ने योग के बाह्य पहलू आसन ,प्राणायाम को तो समझा है परंतु जो योग कि आत्मा है वह तो अध्यात्म है अतः इसे भी समझना आवश्यक है तभी योग का संपूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है, वरन यह शारीरिक, मानसिक, बीमारियों को दूर करने के साधन मात्र के रुप में सीमित रहेगा।

गीता के अनुसार:- योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात कर्म में कुशलता का नाम ही योग है। कर्म में कुशलता के द्वारा जहा व्यक्ति को भौतिक समृद्धि हस्तगत हो जाती है वहीं निष्काम कर्म के द्वारा आध्यात्मिक प्रगति का द्वार भी खुल जाता है तदपश्चात् वह संसार के समस्त बंधनों से मुक्त हो स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति करने लगता है इसलिए महापुरुषों ने योग को साक्षात कल्पवृक्ष कहा है।

योग मनुष्य को नर से नारायण, मानव से देवमानव बनाने का रसायन है। मन निस्संदेह बड़ा चंचल है, परंतु निरंतर अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा मन पर नियंत्रण कर शरीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक ऊर्जा का संचय कर जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। आज हिंसा, आतंकवाद, पर्यावरण आदि की समस्या बनी हुई है। चारों तरफ युद्ध की रणभेरियां बज रही हैं। इन समस्याओं का यदि कोई समाधान है, तो वह योग और अध्यात्म ही है। अध्यात्मिकता के द्वारा एक सीमा रहित विश्व एवं विश्वशांति की कल्पना कर सकते हैं।

-डॉ. प्रणव पण्ड्या, कुलाधिपति

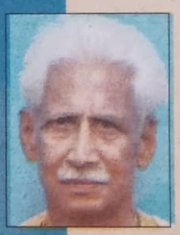

सच कहें तो योग व अध्यात्म ही भारतीय संस्कृति का प्राण है, जहाँ संगीत भी ईश्वर के लिए है, नृत्य भी ईश्वर के लिए है। यहाँ आकर इस्लाम का मुजरा और कव्वाली भी अध्यात्मिक रंग में रंगा है। जहां इस तरह का योग होगा उसके सामने कोई विरोध टिक ही नहीं सकता। जब योग की संपदा आ जाएगी तो लोग स्वतः देवता बनेंगे। सारी वैश्विक विपदाएं समाप्त हो जाएगी, एवं सर्वत्र सुख, शांति और वसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार होगा। एकदिन सारी दुनिया को योग व अध्यात्म के इसी कल्पवृक्ष की छाया में शरण लेनी होगी।

श्री वीरेश्वर उपाध्याय, शांतिकुंज मनीषी

अपने जीवन को पाक-साफ रखना व सबसे प्रेम करना ही योग है। जब तक योग जीवन में न उतरे तब तक इसका कोई मतलब नहीं। वास्तविक शिक्षण वह है जो शब्दों के बजाए आचरण से दिया जाता है। आज के भौतिकवादी जीवन में हर कोई जड़ता की ओर जा रहा है। कोई भी सत्य को पाने की कोशिश नहीं कर रहा है जिसे आध्यात्म कहते हैं। योग उस परम सत्ता के साथ संवाद की अवस्था को प्राप्त करना है ईश्वर की प्राप्ति ही चरम आध्यात्मिकता है। इसके जीवन में आते ही शांति और आनंद की प्राप्ति होती है।

श्री गौरीशंकर शर्मा, व्यवस्थापक, शांतिकुंज

आयोजन अवधि :- 02 अक्टूबर-06 अक्टूबर 2011

22 देश | **165** विदेशी प्रतिभागी

36 सत्र | **20** विशेषज्ञ | **05** दिन

आयोजन में हुए प्रमुख सत्र

1. अध्यात्मिक सत्र
2. प्रायोगिक सत्र
3. वैज्ञानिक सत्र
4. सांस्कृतिक सत्र

Master Quotes

I am really very happy to be here in this great festival. The yoga of Maharshi Patanajali, the father of yoga is for the well being of the global community. Yoga today has become a fashion, such as Laughing Yoga. This is not the original message of Yoga. Yoga in West has become a fashion. This is causing confusion and the real truth about Yoga is missing. There is a need to appeal to the spirituality. There can be no better place than India, particularly conference like this to understand the great philosophy of Yoga & Spirituality, which combine the physical, psychological and spiritual dimensions. All these combined together to make a complete Yogi.

Emy Blesio Gayatri Devi, Milan Italy
President of Yoga Confederation

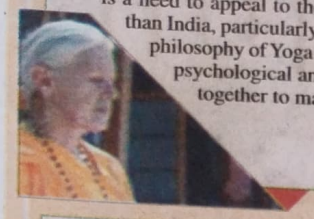

It is very important to know the very basis of life, which are – Purusha and Prakriti and their integration in life. If we not integrate them in life we are dead man working. Indian culture made me realize this practical reality and my life has totally changed. 75 % of diseases in West are not of physical origin. They are of psychological origin, originating due to the negligence of Spiritual part. The spiritual part of our brain is more important. The western doesn't recognize this part. Here Meditation is useful instrument and way to knowledge. We are thankful to India for giving this legacy of spiritual wisdom to the world.

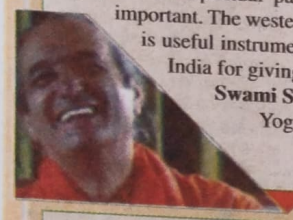

Swami Suryananda, Founder of World Movement for Yoga & Ayurveda, European Yoga Federation and World Movement for fine arts

Inner darkness of heart, due to Avidya is more dangerous than the outer darkness. It is due to avidya and asmita. Without removing inner darkness one can neither have spiritual advancement nor the spiritual experience. The space of the heart is like the sky of the heart where you have to shine your God. In this inner temple you will not get disturbed by ego and lust, you have just to enter this temple, In this inner space dwells God. The importance of mantra – the divine syllable and their chanting is immense which if done properly can open the gateway to inner space. Medidation on the heart centre can do wonder in removing this darkness.

Swami Sachidananda, a Vaishnava monk, Germany. Author of many books on Vedic Spirituality and Gayatri mantra, propagator of Kirtan, Mantra and Meditation as means of Spiritual realization-

Consciousness has been for the last few decades an important topic of scientific research. But in its earlier stage science rejected the very concept of consciousness, declaring that there is no soul, no consciousness. No doubt, the mystery of life, creation and consciousness can't be solved by science. The science has no such models, which can unveil this mystery. Because the vision of a physical scientist can't see beyond matter. It is spiritual scientists who can face this challenge and answer the westion.

Spirituality takes us beyond this. It transcends our limited personal identity and makes life meaningful. Spirituality clarifies our Swadharma, being part of something greater beyond oneself.

Prof. Marcus Schmieke, the inventor of Time Waver Machine-

I have seen many cultural programmes but the experience. I had here last night is really amazing and can't be compared with others one. The atmosphere of this place is really beautiful.Tri-yoga is a spontaneous flow of kundalini shakti. It is the awakening of Prana and kundalini. It is trinity of mother energy comprising of asana, mudras and pranayam. Anybody can adopt this path and can easily imbine this knowledge through proper spiritual practices and can easily reform the life. Through self transformation, one can effectively transform the world. Be the change you want to see in the world.

Swamini Kali Ji, founder of Tri yoga-

HOLISTIC HEALING

Experimental Session of Pranik healing, Accupressure, Naturopathy, Meditation, Yoga Nidra were in fact like different flowers of the festival spreading their fragrance all around. Among them which impressed the foreign participants very much was indeed Yagya Therapy.

Several scientific researches conducted in the field of yagya has proved that yagya occupies an important place in the field of therapy as well. That is why today yagya has emerged as a therapy capable of curing many physical and mental diseases like T.B, cancer, AIDS, Ashthama, Heart diseases, Stress, Depression, Anxiety etc. this is the reason why our ancient rishis stressed the need of yagya in one's day-to-day life for his physical, mental and spiritual well being. This is what Dr. Vandana Srivatava, head of the dept. of holistic health management, D.S.V.V, explained to the participants while performing yagya during the second International Festival on, Culture and Spirituality organized by D.S.V.V in the week of Oct, 2011.

Yagya is actually the spiritual experiment of sacrificing and sublimating the hawan samagri in the yagya agni with chanting vedic mantra. Yagya is not only an excellent process of environmental purification, but it could also be used as a powerful remedy against varieties of psychiatric deseases and psychosomatic disorders by proper

selection of wood and hav
samagri. Dr. vandana srivastav
explained " not only the rishi munis
but also the common men, the ric
and the poor, the kings and th
citizens in those days all ha ee
faith and respect for yagya and the
used to sincerely participate an
lend whole hearted support
different kinds of yagya". The sai
and sadhus used to spend at lea
one third of their lives in con
and providing all the c
through yagya. Although there a

From the bott

This festival is special for us because it is a unification of different cultures. It is based on spiritual science, beliefs and higher values. In Russia there are many Yoga centers which are just like a fitness club, but we got the real knowledge of Yoga here, which is refining the mind and get connected with macrocosm.

Apalkova Zlata, Russia

I love this place very much. This is my fourth visit to India. Indian people are very caring; they are naturally full of respect, grace and full of divine feelings. The Indian family concept, their behavior and their tradition; all makes Indian culture unique. That's why we call it Divine Culture.

Dr. Alfredo Pauleo Lauria, Argentina

Yoga a
same but
Culture c
negative.
than it is c
is negativ
culture.
philosoph
learn abo
culture m
from ancient period. Vedanta
culture.

Yoga h
attraction
practice
internal
Guru is
teaches t
Indian c
spiritual
ancient a
cultures,

culture unique.

eni

ga, Culture & Spirituality

THROUGH YAGYA

The second International festival on Yoga, Culture and Spirituality began on October 2, 2011 at Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Shantikunj, Haridwar. This mega event reached the peak of climax on October 6, 2011 with its grand conclusion providing an equitable platform and blissful experience to its participants, from over 22 countries. This festival indeed, set a milestone in promoting Yoga, Culture and Spirituality across the globe for the well being of the whole humanity.

hany benefits, which involves the urification of environment or lobal warming appears to be down aid spontaneously.

When yagyas are adeptly rmed with a collective hanting of powerful mantras by piritually refined sadhakas and sing appropriate havan samgri and ood, the next moment the spiritual aves of mantra shakti and yagya sparks divine radiance in all participating in yagya and ose whose inner self is linked with these subtle domains of consciousness to the most energetic and boosted one's. Yagya also diminishes all the inner selfishness, ego, attitude, jealousy, hatred, immorality and other evils and devils. Spiritual super science will get preferences over material science in upcoming future. This prediction of the advear of the new golden era is foretold in the scriptures of the world and has been foreseen by the seer-vision of mystic masters around.

n of heart

pirituality are re is neutral. positive and ure is positive ulture and if it it is a polluted a is a great m which we tuality. Indian the continuity key of Indian **Dennis**, USA

It is a great joy to be the part of this International festival. Here everyone is like a source of knowledge from different countries, which unites the spirit of Yoga and Culture. This University is a great university, which is having multidimensional aspects of spirituality. Yoga is not a physical exercise but power of concentration. Through yoga we uplift our consciousness which is a part of spirituality. **Victor Chevstov (Aditya)**, Russia

me center of It is all about xternal and ality and the person who pirit of Yoga. is based on n. It is very gin of all the makes Indian Devi, Portugal

It was a grace for us. We have visited every session of Yoga. Yoga is very deep technique to transform personality and getting charged with spiritual energy. It teaches us refined techniques of concentration and mediation. My guru appreciates Indian culture. He is a good philosopher of Advaita Vedanta. This University gives various technique of developing personality, which we want to transmit in our country. **Dimitry**, Belarus

Master Quotes

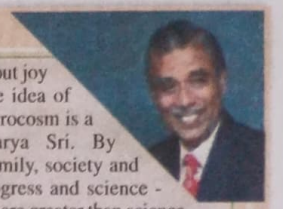

Science has given comfort and convenience but joy of life, harmony and peace are missing. The idea of transforming macrocosm by transforming microcosm is a great revolutionary idea given by Acharya Sri. By transforming individual, we can transform family, society and world at large. Science + Spirituality = Progress and science - spirituality = Destruction. Spirituality and Yoga are greater than science that lead to inner development and ultimate fulfillment of life. Life without spirituality is disaster. Science devoid of spirituality can cause several Hiroshima's. In fact Spirituality is a life of dedication, integrity and commitment. Character is the essence of spirituality. Where there is spirituality, there is peace, harmony and prosperity.

Padamshri D.R. Karthikeyan, Former Chief of CBI

It is a divine confluence of Yoga, culture and spirituality. This unique combination makes this place sacred. Its holy vibrations are sure to touch the heart and soul of the participants and lead to transforming experience. India is the Holy land of Rishis, who created the environment, where Spirituality is in the air and one can have its direct experience. If our professional or career life is OK, but there is leak in the inner life, the boat of life is sure to sink. Spirituality comes to rescue here. Geeta teaches us how to practice Yoga and how it is manifested. Only when one gets connected with God, there comes mukti from grief.

Sadhavi Bhagwati Sarasvati, Representative of Muni Chidananda of Parmartha Niketan Rishikesh-

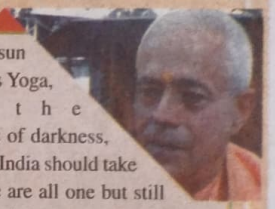

We greet the great India, which is a ray of the sun or hope for the whole humanity because of its Yoga, culture, spirituality and moral values. India is the motherland of Yoga. To fight the active forces of darkness, now there is the need of institutional efforts and India should take the lead. True human aim is cosmic union. We are all one but still need to fulfill it. There is a need of Divine creativity. We are fortunate to have this spiritual gathering on the banks of holy Ganga, in the lap of Great Himalayas and in the land charged with the spiritual vibrations of intense tapa by Acharya sri and other Rishis.

Jagadguru Amrit Suryanand (Jorge veiga e Castro), Founder and President of the Yoga Portuguese Confederation-

Due to dominance of animal nature humanity has suffered. We have witnessed so many wars, terroristic violence, ethnic hatred, killing in the name of religion around the world. It is all due to the degenerated consciousness of individuals and masses. Through Yoga we can raise human consciousness and bring peace and harmony in the world and justify our existence as true human beings. True human being can't be involved in immoral activities as they are full of Love and respect for others.

Bhai Hari Singh Khalsa, Worldwide recognized as one of the most knowledgeable and skilled expert on yoga, meditation and tantra-

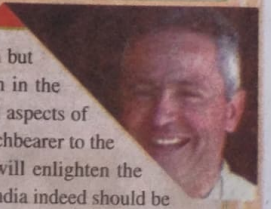

Yoga is a very rich mine of spiritual wisdom but today it is confined to the physical dimension in the West. There is the need to explore the Spiritual aspects of Yoga. Indian Yogic tradition can be the real torchbearer to the aspirants in this pursuit. I hope this festival will enlighten the visitors with the Spiritual dimension of Yoga. India indeed should be very proud of being the land of Yogis. Yogis like Maharishi Patanjali, Swatmarama, Maharshi Gheranda, and Guru Gorakhnath are like the stars shining in the sky for ever guiding the true spiritual seekers. Their literatures are the storehouse of Yoga.

Prof. Macro Ferrini, Founder and President of Centro Study Bhakti Vedanta-

अध्यात्म के बिना विज्ञान अधूरा एवं संकटदायक

क्वांटम ऊर्जा पर आधारित टाइम वेवर मशीन के जनक प्रो. मार्क्स स्कमिके के साथ हुए साक्षात्कार पर आधारित फीचर लेख .

विज्ञान, मनोविज्ञान और चिकित्सा विज्ञान ने इंसान की प्रशंसनीय सेवा की है, लेकिन बिना अध्यात्म के तीनों आज मानव जाति के लिए कई परेशानियों का कारण बन गए हैं। बिना अध्यात्म के विज्ञान जीवन की सम्पूर्ण समझ दे पाने में असमर्थ है। अध्यात्म से रीता मनोवैज्ञानिक निदान गहन स्तर पर सकारात्मक उपचार नहीं दे पा रहे और चिकित्सा भी आध्यात्मिक चेतना के अभाव में सतही साबित हो रही है। मानवता के हित में तीनों को आध्यात्मिक संस्पर्श की जरुरत है। ये विचार हैं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय योगए संस्कृति एवं अध्यात्म महोत्सव में पधारे प्रो. मार्क्स स्कमिके के जो मूलतः जर्मन भौतिकविद हैं। लेकिन जीवन विज्ञान इनकी रुचि एवं शोध का गंभीर विषय है।

कालेज के दिनों में ही भौतिक विज्ञान के छात्र मार्क्स को इनके जर्मन शिक्षक दर्शन एवं अध्यात्म की ओर प्रेरित करते हैं। 21 वर्ष की आयु में स्वामी सच्चिदानंद के संपर्क में आते हैं और भारतीय अध्यात्म व इसके वैज्ञानिक स्वरुप को लेकर इनकी जिज्ञासा एवं रुचि और गहरी हो जाती है। भारतीय आर्ष ग्रंथों के पारायण के बाद उनकी दृढ धारणा बनती है कि चेतना जीवन का मूल सत्य हैए जिसे विज्ञान अपने बचपने में एक सिरे से नकार रहा था। और ये विज्ञान की इस दंभपूर्ण घोषणा को चुनौती के रुप में लेते हैं कि चेतना या आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं। धर्म के पास इसका समाधान नहीं है और अध्यात्म एक भ्रम के पीछे दौड़ रहा है।

आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न प्रो. मार्क्स स्कमिके चेतना के अस्तित्व और इसकी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर शोधपूर्ण दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं और उनकी पहली पुस्तक साइंस एंड कॉशियसनेस प्रकाशित होती हैए जो जगत को केवल भौतिकवादी नजरिए से देखने वाले वैज्ञानिकों को सोचने के लिए बाध्य करती है। इसी के साथ मार्क्स भारतीय विद्याओं में गहरा उतरते हैं और सूक्ष्म ऊर्जाए वास्तु शास्त्रए ज्योतिष विज्ञानए मंत्र शक्ति आदि भारतीय विद्याओं पर 20 से अधिक शोधपूर्ण पुस्तकों की रचना करते हैं।

प्रो. मार्क्स का स्पष्ट मत है कि भौतिक दृष्टि तक सीमित विज्ञान के पास और समाधान हो सकते हैंए लेकिन चेतना का रहस्यए जीवन का रहस्यए सृष्टि का रहस्य इसके लिए एक पहेली बना हुआ है और इसके पास इसके समाधान को कोई मॉडल नहीं है। इसका सही व सार्थक समाधान आध्यात्मिक दृष्टि सम्पन्न वैज्ञानिक ही दे सकते हैंए जिन्हें चेतना विज्ञान की गहरी समझ है।

इनके शब्दों में विज्ञान वस्तुगत सत्य का ही अध्ययन कर पाता है जो कि देश काल की सीमा में बद्ध हैए जबकि जीवन एवं जगत का सत्य इससे पार हैए जहाँ तक पहुंचने का मार्ग अध्यात्म के पास है। यह क्षुद्र स्व से परे विराट विश्व ब्रह्माण्ड तक ले जाता है और चेतना के मूल स्रोत से जोड़ता है। अध्यात्म भेद दृष्टि को हटाकर ईश्वरदृष्टि प्रदान करता है।

प्रो. मार्क्स पदार्थ और चेतना के बीच के अंतर्सम्बन्ध को लेकर ठोस प्रायोगिक शोध भी कर रहे हैंए जिसके आधार पर इन्होंने टाइम वेवर मशीन इजाद की है। इसके माध्यम से किसी भी पदार्थ के क्वांटम स्तर की ऊर्जा की जाँच की जा सकती है। इस मशीन का उपयोग चिकित्सा के क्षेत्र में किया जा रहा है और अभी इस पर शोध जारी है। यह मशीन व्यक्ति की भौतिक एवं जैविक चेतना का अध्ययन करते हुएए शरीर में पनप रही विकृतियों का पता लगाती है और संभावित उपचार का उपाय भी सुझाती है। अभी जर्मनी में लगभग 500 चिकित्सक इसका उपयोग कर रहे हैं। देवसंस्कृति विवि में भी इस पर गंभीर शोध प्रस्तावित है।

अपने शोधकार्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रोण् मार्क्स देवसंस्कृति विवि से 2008 में शैक्षणिक अनुबन्ध कर चुके हैं। भारतीय ज्ञान-विज्ञान की विविध धाराओं के अध्ययन एवं शोध को समर्पित देवसंस्कृति विवि एवं इसके वैज्ञानिक अध्यात्म के पाठ्यक्रम को लेकर प्रो. मार्क्स खासे उत्साहित हैं। देवसंस्कृति विवि एवं शांतिकुंज के आध्यात्मिक वातावरण में इस क्षेत्र में गंभीर शोध के आशाजनक परिणाम हेतु आशान्वित हैं। विवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या के कुशल मार्गदर्शन में प्रो. मार्क्स, वास्तु ऊर्जा के विज्ञान पर शोध कार्य भी कर रहे हैं।

कुलपति डॉ. एसडी शर्मा

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय

कुलसचिव श्री संदीप कुमार

हर शाम रही सांस्कृतिक कार्यक्रमों से गुलजार

अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव के दौरान प्रत्येक संध्या सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सराबोर रही। महोत्सव की पहली संध्या पर कलाकारों ने कृष्ण के विभिन्न रूप जैसे नटखट माखनचोर, कालिया मर्दक, रास रसैया, गीताकार आदि को बखूबी मंचित किया। जहाँ कृष्ण के बालरूप ने दर्शकों को हँसाया वहीं विरहनी राधा के दुख और प्रेमिका राधा के सुख ने दर्शकों भावों और अलंकारों के समंदर में गोते लगाने के लिए मजबूर कर दिया। इस कार्यक्रम की निर्देशिका थीं कथक योग क्वीन प्रतिष्ठा शर्मा।

दूसरे दिन की सांस्कृतिक संध्या विश्वविद्यालय के प्रतिभावान छात्रों के नाम रही। अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से संस्कृति के इन पुजारियों ने इस संध्या के उत्साह को चरम पर पहुँचा दिया। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत कोरियन छात्रा निर्मला का कोरियन वाद्ययंत्रों की धुन पर नृत्य, छात्राओं की योग प्रस्तुति, गुजराती गरबा और मिले सुर मेरा तुम्हारा पर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण बिन्दु बने।

तीसरे दिन देशी राग, विदेशी स्वर और परंपरागत संगीत की त्रिवेणी में सराबोर रही ये संध्या। इसका आगाज पुर्तगाली पशुपति दल ने योग पर आधारित संगीत सरिता से किया। इस क्रम में श्रीमन नारायण नारायण, सीताराम कहो, राधेश्याम कहो आदि भजनों के माध्यम से ईश्वर भक्ति का अद्भुत रूप प्रस्तुत किया गया। इस तरह पुर्तगाल और इटली के नौ सदस्यों ने कुल पाँच प्रस्तुतियाँ दीं। अंत में विश्वविद्यालय के छात्रों के द्वारा दी गई टेबिल योगा की प्रस्तुति ने भी खूब तालियाँ बटोरीं।

चौथे और सांस्कृतिक संध्या के अंतिम दिन हुआ दीपयज्ञ का कार्यक्रम जो कि गायत्री परिवार की संस्कृति में अनुपम कार्यक्रम है और हर पावन कार्यक्रम में किसी के भी द्वारा आसानी से कराया जा सकता है। इसमें क्रियापक्ष से ज्यादा भाव पक्ष की प्रधानता है। जिसके माध्यम से भक्त अपने भावों को आसानी से परमात्मा को अर्पित करते हैं।

इस महोत्सव में विभिन्न वैज्ञानिकों सत्र भी हुए। जिनमें योग के चिकित्सीय लाभ, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की पुरातन एवं आधुनिक अवधारणा, ईश्वर एवं समाधि आदि उल्लेखनीय थे।

पूर्ण विश्रान्ति की अवस्था है योग निद्रा

''योग निद्रा के लिए तैयार हो जाइए, शवासन की स्थिति में लेट जाएं, आंखें बंद, शरीर शांत, मन शांत, अपनी चेतना को शरीर के प्रत्येक अंगों पर ले जाएं, भावना करें की शरीर के प्रत्येक अंग ब्रह्माडीय ऊर्जा को धारण कर स्फूर्तिवान-ऊर्जावान बन रहे हैं, आदि-आदि।

यह है देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अक्टूबर मास के प्रथम सप्ताह में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सव के दौरान देश-विदेश से आए प्रतिभागियों को कराये गये योग निद्रा के अभ्यास की एक झलक।

योग निद्रा अभ्यास के बाद सभी प्रतिभागियों के चेहरे शांति व प्रसन्नता से खिल उठे। देश-विदेश आए प्रतिभागियों ने योग निद्रा के उपरांत अपना अनुभव कुछ इस तरह बयां किया।

एरिना जेनेटी : ''योग निद्रा के बाद मैंने अपने आप को ऊर्जावान व प्रफुल्लित महसूस कर रही हूं।''

मारिया टेरेसा पीपे : ''योग निद्रा के बाद मैंने अपने आप को शारीरिक व मानसिक रुप से शांत व तनाव मुक्त महसूस कर रहा हूं।''

मनीष गुप्ता : ''योग निद्रा ने हमारे मन व मस्तिष्क को अत्यधिक शांति प्रदान किया है और मैं भविष्य में भी योग निद्रा का लाभ उठाता रहूंगा।''

योगाचार्य डॉ. कामाख्या कुमार के अनुसार-आज के विषाक्तता भरे वातावरण में जहां व्यक्ति ने अपनी विकृत जीवन शैली, खान-पान, रहन सहन के कारण कई शारीरिक व मानसिक बीमारियों को आमंत्रित किया है, योग निद्रा उनके जीवन को व्यवस्थित कर उन्हें अनिद्रा, तनाव, रक्तचाप, हृदय रोग, आदि से निजात दिला सकती है। पिछली एक या दो शताब्दियों से विभिन्न रोग नये-नये आयामों, रूप रंग एवं आकारों में उभरकर सामने आये है और उन्होंने विकराल रुप धारण कर लिया है। आज अनेक बीमारियां जैसे मधुमेह उच्च रक्तचाप दमा अल्सर तथा पाचन एवं चर्म संबंधी व्याधियाँ शरीर एवं मन के तनाव के कारण ही उत्पन्न होती है। विकसित देशों में कैंसर एवं हृदय रोग से होने वाली अधिकांश मौतों के मूल में तनाव ही है। जिसका सफल उपचार योग निद्रा से ही संभव है।

-: क्या है योग निद्रा :-

योग निद्रा वस्तुतः एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन न तो सुप्त अवस्था में होता है ना ही पूर्णरुपेण जागृति की अवस्था में। योग निद्रा पूर्ण शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विश्रान्ति लाने का एक व्यवस्थित तरीका है। योग निद्रा में अंतराभिमुख होकर, बाह्य अनुभवों से दूर जाकर विश्रान्ति की अवस्था तक पहुंचा जाता है। योग निद्रा के द्वारा यदि चेतना को बाह्य सजगता से और निद्रा से अलग कर दिया जाए, तो वह अत्यंत शक्तिशाली हो जाती है। योग निद्रा न तो ध्यान है, न ही स्वप्न है, न ही समाधि है और न ही नींद है योग निद्रा पूर्णतः विश्राम की अवस्था है जिसमें शरीर व मस्तिष्क दोनों को विश्राम की स्थिति में लाया जाता है। योग निद्रा के दौरान ऐसा लगता है कि व्यक्ति सोया हुआ है, परन्तु चेतना सजगता के अधिक गहरे स्तर पर कार्य कर रही होती है। योग निद्रा का अर्थ है - सजगता के साथ सोना, अर्थात नींद में भी सजगता के साथ सोना, अर्थात् नींद में भी सजगता, चेतनता बनी रहे। मन की अनेक अवस्थाओं में से यह मन की जाग्रत एवं सुषुप्ति के बीच की एक अवस्था है जहां नींद में भी व्यक्ति का बौद्धिक मन कार्यरत रहता हैं योग निद्रा के द्वारा व्यक्ति के मन को बदला जा सकता है। रोगों की रोकथाम कर उन्हें दूर किया जा सकता है। व्यक्ति की स्वयं की प्रतिभा का विकास किया जा सकता है। योग निद्रा के अभ्यास से एकाग्रता के द्वारा मानव मन की गहराईयों में प्रवेश किया जा सकता है।

की अलख जगाता विचार मंच

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

अपने विचारों को व्यक्त करते हुए शांतिकुंज की वरिष्ठ स्वयंसेविका कु. दीना वेन ने कहा कि गुरुदेव ने वर्ष 1971 में ही परमवंदनीया माता जी को आगे करते हुए नारी जागरण की घोषणा कर दी थी और विधिवत रुप में 1973 में नारी जागरण का उद्घोष किया। इसी दौरान भविष्यवक्ताओं ने भी समवेत स्वर में 21वीं सदी को नारी सदी घोषित करना शुरु किया था। नारी सदी का अभिप्राय गुरुदेव के शब्दों में यह था कि यह भाव प्रधान सदी होगी। नारी जागरण से बढ़कर और कुछ नहीं हो सकता। परमवंदनीया माता जी के शब्दों में नारी जागरण का सार एक शब्द में -जिस दिन ईर्ष्या तत्व खत्म होगाए उसी दिन नारी जागरण की शुरुआत होगी।

नई पीढ़ी को संस्कार नहीं मिल पा रहे और परिवार टूट-बिखर रहे हैं। इसके लिए सबसे पहले स्वयं को बदलना होगा।

श्रीमती अपर्णा पंवार शांतिकुंज ने नारी जागरण को लेकर पश्चिमी देशों में चल रही लहर और इसके भारतीय स्वरुप के बीच मौलिक अंतर को स्पष्ट किया। पश्चिम में नारी मुक्ति स्वतंत्रता का पर्याय है जिसमें व्यक्तिगत अधिकार की प्रधानता है। जबकि भारत में नारी जागरण अपने साथ समाज के सम्मुन्नत विकास से जुड़ा है। पश्चिम में पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा का भाव है जबकि यहाँ सहयोग का भाव है। इन्हीं कारणों से यह अत्यन्त सफल सिद्ध हो रहा है।

शांतिकुंज में आज पंजीकृत सक्रिय मंडल की संख्या 15699 है जो देश के लगभग हर प्रांत में सक्रिय हैं।

छत्तीसगढ़ की मुक्ता बहन के अनुसार उनका महिला मंडल पारिजात नीम वट पीपल के एक लाख वृक्ष लगा चुका है। तुलसी के तो इतने पौध लग चुके हैं कि इनकी गिनती सम्भव नहीं। एक वृक्ष 10 पुत्रों के पालन के बराबर समझाते हुए ये संकल्पपूर्वक लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित कर रही हैं।

नक्सलवाद से प्रभावित इस क्षेत्र में अनाथ कन्याओं एवं बालकों के लिए शिक्षा.संस्कार एवं स्वावलम्बन की व्यवस्था मंडल कर रहा है। दिल्ली एनसीआर क्षेत्र से आई कामत जड़िया ने शिक्षा,स्वास्थ्य एवं रोजगार से वंचित गाँवों में शिक्षा, चिकित्सा, स्वावलम्बन, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता आदि को लेकर महिला मंडल की गतिविधियों का ब्यौरा पेश किया। आँध्र प्रदेश से दुर्गा सावित्री राव ने कैंसर एवं मधुमेह को यज्ञोपैथी के माध्यम से ठीक करने के उत्साहवर्धक परिणामों पर प्रकाश डाला। उड़ीसा की जुडिशल मैजिस्ट्रेट कुमुदिनी बहन रायगढ़ में बलि प्रथा को रोकने में उनके महिला मंडल ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की है। कलापाड़ा गाँव में 100 महिलाओं ने मिलकर नशा मुक्ति अभियान को अंजाम देकर नशामुक्त आदर्श गाँव की स्थापनी की है। प्रशिक्षित लड़कियाँ 90 पंचायतों में सप्तक्रांति को सफल बनाने में जुटी हैं। इनके महिला मंडल की नैष्ठिक बहनें घर-घर जाकर समस्याओं का समाधान कर रही हैं और यज्ञ के माध्यम से जाति प्रथा के खिलाफ सफल अभियान चला चुकी हैं।

शांतिकुंज की महिला मंडल प्रमुखए यशोधा शर्मा द् इनके इन प्रयासों से ऐसा लग रहा है कि जैसे नारी जाग चुकी है और उक्ति चरितार्थ कर रही है कि :

एक चिंगारी अब अंगार बन गई हैए रौंदी गई मिट्टी अंगार बन गई है।
मीनार बनने का समय आ गया हैए पतवार बनने का समय आ गया है।

परमवंदनीया माताजी के सूक्ष्म संरक्षण एवं आदरणीया शैलजीजी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में शांतिकुंज में बहनें बढ़-चढ़ कर हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं, जिसमें भाइयों का सहयोग सराहनीय है। कलश यात्रा में महिलाओं की विशेष भूमिका रहेगी। नारी की महिमा का जिक्र करते हुए वे बोलीं :

नारी तुम बासंती बगिया होए खिलती और खिलाती होए
अपना जीवन रस सींच करए जगभर को सुधा पिलाती हो
यदि तुम मुरझाने लगे तो फिर दिगदिगंत का क्या होगा।
यदि यह जीवन रस बना रहेगा जो सब ठीक हो जाएगा।

परमवंदनीया माताजी के सुत्र का जिक्र करते हुए कहा कि आपस में मिलो बैठो, मिलोगे तो बातचीत होगी और समाधान का रास्ता प्रशस्त होगा।

...से निकली संकल्प की सरिता

अपनी रोजी-रोटी कमा रहे हैं, उन्हें किसी के आगे हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं है। यहां की महिलाएं 300 रुपए रोजना कमाती हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ग्राम प्रबंधन विभाग के डॉ. डीपी सिंह ने योजना के बारे स्पष्ट करते हुए बताया कि इसका उद्देश्य भारतीय गांवों को स्वच्छ, स्वस्थ, स्वावलंबी, व्यसनमुक्त और सहयोग तथा सहकार से युक्त बनाना है। देसंविवि में ऐसे प्रोजेक्ट तैयार किए हैं जिसके माध्यम से देश के 100 प्रतिशत युवाओं को रोजगार मुहैया कराया जा सकता है।

वृक्षगंगा अभियान के बारे में बताते हुए शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता केपी दुबे ने कहा कि वृक्षगंगा के माध्यम से मां भारती को हरी चूनर चढ़ाने का जो संकल्प लिया गया था वह अब विस्तृत रुप ले चुका है। देश के नैमिष्यारण्य और मध्यप्रदेश के कई स्थानों का उदाहरण देते हुए उन्होंने वृक्षगंगा अभियान के भव्य स्वरुप का परिचय दिया। मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता भाई मनोज तिवारी ने वृक्षगंगा अभियान की सफलता के चरणों को विस्तार से बताया।

शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ता आरके नायक ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा तथा डॉ. कुंती साहू ने बाल संस्कार शाला के स्वरुप पर प्रकाश डालते हुए इनके महत्व को स्पष्ट किया। इसके अलावा शांतिकुंज के कवि शचीन्द्र भटनागर जी ने अपने गीत के माध्यम से इस विचार त्रिवेणी की सरिता को जीवंत रुप प्रदान किया। मंच संचालन देसंविवि के पूर्व कुलपति डॉ एसपी मिश्र ने किया। कुलपति डॉ एसडी शर्मा सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

श्रद्धेया शैल जीज़ी

नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष के समान है। माँ बेटी भगिनी के रुप में वह पुरुष का भावनात्मक सिंचन करती है और पत्नी के रुप में उसकी अपूर्णता को पूर्णता देती है। धनपति कुबेर लक्ष्मी से बहुत बौने प्रतीत होते हैं, सरस्वती से बड़ा कला-विद्या का प्रतीक कौन है। सभी देवताओं की सामूहिक शक्ति दुर्गा का रुप धारण करती है।

आज नारी विज्ञापन की वस्तु बन गई है और यदि भावी पीढ़ी ऐसे में उद्दण्ड हो रही है तो इसमें आश्चर्य क्या, क्योंकि वह संस्कार देती है। जब उसकी स्थिति गरिमापूर्ण होगी, तभी पीढ़ियाँ संस्कारवान होंगी। वह राष्ट्र की निर्मात्री है।

रीछ बानर के साथ राम के अनुदान पाने की अधिकारिणी एक गिलहरी भी थी, जो उसे मिला वह किसी को नहीं। आज अपने गिलहरी पुरुषार्थ द्वारा हर अकिंचन सा व्यक्ति भी आयोजन में अपनी भावपूर्ण भूमिका निभाते हुए जीवन को धन्य कर सकता है।

...जेश यादव, दिल्ली: आधुनिक टेक्नोलॉजी जैसे ई-मेल, के जरिए ... तक गुरुदेव के विचारों को पहुंचाते हैं। लोगों का बहुत अच्छा ... मिलता है। 300000 लोग अब तक जुड़ चुके हैं। 1940 से शुरु ... अखंड ज्योति एवं 1960 से शुरु हुई युग निर्माण योजना को वेबसाइट ... डाल दिया गया है। 1940 से अबतक की अखंड ज्योति जिसमें ... 43 हजार पृष्ठ हैं को कम्पोज करवाकर वेबसाइट पर डालने की ... है।

...न्द्र शुक्ला, महाराष्ट्र : जनवरी 1993 से सप्त क्रांति आंदोलन ... रहे है। महाराष्ट्र में अब तक 50 हजार वृक्षारोपण, सद्वाक्य लेखन। ... मुक्ति आंदोलन, युवा सम्मेलन, सामुहिक विद्यारम्भ संस्कार तथा ... ज्योति के नए सदस्यों को जोड़कर जागरुकता फैला रहे हैं।

श्री मनोष कुमार, युवा मंडल, पटना : 50000 युवा, प्रकोष्ठ से ... 8000 युवाओं का नशा छुड़वाया। स्लम एरिया के 5000 बच्चों ... पढ़ाने का काम कर रहे है। स्वावलंबन के तहत कुटीर उद्योगों का ... देने का काम करते हैं।

...न साह, बंगाल - पर्यावरण आंदोलन के तहत 2010 से ... हजारों वृक्ष लगवा चुके हैं। बंगाल के लोग इससे बहुत प्रभावित ... और इस अभियान से जुड़ रहे हैं।

गुजरात : व्यसन मुक्ति आंदोलन के तहत कॉरपोरेट घराने से जुड़े लोगों को व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया। शिक्षा आंदोलन के तहत बाल संस्कारशालाएं एवं तकनीकि शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था। स्वावलंबन आंदोलन के तहत प्रिंटिंग, किताब बाईंडिंग, आर्टिफिशियल जर्वेलरी के काम का प्रशिक्षण 100 लोगों को देने के साथ शुरु हुआ।

साधना आंदोलन के अंतर्गत ओशो रजनीश आश्रम के साधनों को भी जोड़ा। इंटरनेट के द्वारा 100000 से अधिक युवाओं को अपने वेबसाइट से जोड़ा। शिविर, पुस्तक मेला, आदि लगाए जाते है।

एस.बी राजू, हैदराबाद : डॉ. साहब की प्रेरणा से दिया से जुड़कर इसे हैदराबाद में शुरु किया। मुख्य लक्ष्य है युवाओं के विचार परिवर्तित करना और इसके लिए उन्हें गुरुदेव के साहित्य से परिचित कराना। स्कूल, कॉलेज से युवाओं के समझ युवाओं के लिए गुरुदेव के विचार को प्रस्तुत करना। देसंविवि मुस्लिम समुदाय के लिए खोलने का संकल्प, साथ में दूरस्थ शिक्षा केन्द्र। इनके प्रयास से बंगलौर, चेन्नई, हैदराबाद में भी दिया सक्रिय हुआ है। मिलिट्री आफिसियल, वायूसेना के अधिकारियों के बीच भी कार्यक्रम दिया है, विभिन्न विषयों पर जीवन उत्कर्ष, समय प्रबंधन, व्यकित्व परिष्कार स्वास्थ्य प्रबंधन आदि। हैदराबाद में अन्ना हजारे भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में युवा शामिल हुए।

मध्यप्रदेश, युवा प्रकोष्ठ : प्रदेश के 3000 इकाईयों के माध्यम से 70000 युवाओं को जोड़ा गया है। नर्मदा सहित पांच नदियों के शुद्धिकरण का अभियान चलाया गया। आदर्श ग्राम अभियान के तहत 60 ग्राम को चिन्हित किया गया है। 7 आदर्श ग्राम बन कर उभरे हैं। वृक्षारोपण अभियान के तहत 6 लाख वृक्षारोपण कर चुके हैं। 7 श्रीराम स्मृति उपवन बन चुके है। बाल संस्कार शाला के तहत पूरे प्रदेश में 1200 संस्कार शालाएं चल रहे हैं। नशा मुक्ति के तहत स्कूल, कॉलेज, में सघन अभियान चलाया जा रहा है।

समर्थ सारस्वत, चेन्नई, युवा, प्रकोष्ठ, दिया : योग के माध्यम से परीक्षा के भय को दूर करने के उपाय बताते है, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, देसंविवि से इंटर्नशिप पर आये बच्चों द्वारा स्कूल, कॉलिजों में कार्यक्रम करवाते है। कॉरपोरेट स्तर पर 1007 वायु आफिसियल के बीच सेमिनार। बच्चों मे लिए योग वर्कशॉप, ऑन लाइन कैंपेन, 100 से ज्यादा पुस्तकों का अंग्रेजी, तमिल, भाषा में अनुवाद। 2000 से अधिक अखंड ज्योति सदस्य बनाने के संकल्प। शचीन्द्र भट्नागर द्वारा गुरुदेव पर रचित महाकाव्य ''प्रज्ञावतारलिंगम'' का विमोचन भी हुआ।

गायत्री महाकुंभ झलकियां

एक करोड़ मूल्य के साहित्य वितरण का संकल्प

''ज्ञान दान से बड़ा कोई दान नहीं एवं ज्ञान यज्ञ से बड़ा कोई यज्ञ नहीं।'' -पं. श्री रामशर्मा आचार्य के इसी संदेश को आत्मसात् करते हुए गुजरात के राजू भाई पटेल ने जन्मशताब्दी समारोह के वृहद कार्यक्रम को देखते हुए कुछ करने का संकल्प लिया। इस संकल्प को पूरा करने के लिए वे 1 करोड़ का साहित्य पुस्तक मेले से खरीदकर जन-वितरण का कार्य कर रहे है। जन्मशताब्दी का विशेष संदेश संग्रह पुस्तक सेट- ''जन्मशताब्दी ज्ञान प्रसाद'' को भी आधे मूल्य पर बेचने के लिए राजू भाई ने विशेष सहायता राशि दी है।

पर्यावरण पर यज्ञ के प्रभावों पर होगी रिसर्च

यज्ञ से होता है पर्यावरण शुद्ध। यह बात वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध होगी गायत्री महाकुम्भ में देसविवि के विश्वविद्यालय प्रतिकुलपति डा0 चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में होने जा रहे शोध में। जिसमें 1551 कुण्डीय यज्ञ का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन होगा। सौलिड वेस्ट मैनजमेन्ट, वायु, ध्वनि प्रदूषण पर भी शोध किया जायेगा।

1988 से चला रहे है नशे के विरूद्ध अभियान

नशा हमारे समाज की सबसे ज्वलन्त समस्या है जो हमारे समाज को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। नशा मुक्ति व समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार ने अपने सप्त सूत्री कार्यक्रम चलाये हैं। गायत्री शक्तिपीठ वाटिका ,जयपुर पूरे देश में नशा मुक्ति अभियान 1988 से चला रहा है। इस अभियान के तहत नशा मुक्ति प्रशिक्षण ,रैली ,नुक्कड नाटक, गोष्ठियाँ, नशा मुक्ति केन्द्रों की स्थापना , नशा मुक्ति शिविरों के माध्यम से राष्ट्रीय जागृति शिविरों से। साथ ही विश्व तम्बाकू निषेध दिवस का आयोजन हर साल विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर राज्य सरकार भी गायत्री शक्तिपीठ वाटिका का सहयोग लेकर आयोजित कराती है।

अनूठी पाठशाला बना सैलाना का प्रज्ञाकुंज

मां गंगा की गोद में चल रहे जन्म शताब्दी कार्यक्रम में बच्चे अलग अंदाज में आगंतुकों की सेवा कर गुरूदेव के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित कर रह रहे हैं। यह बच्चे वैरागीदीप में अपने गुरू राकेश शर्मा के साथ ठहरे हुए हैं। गाजियाबाद के निकट सैलाना गांव के 8 बच्चे प्रज्ञाकुंज सौलाना से आए हुए हैं। ये बच्चे वैरागीदीप में भोजन करने वाले व्यक्तियों को उनके स्थान पर जल लाकर देते हैं। उनसे बात करने पर पता चला कि य अपने गुरू के साथ कार्यक्रम में शिरकत करने आए हैं। उन्होंने बताया कि सौलाना को डॉ प्रणव पण्ड्या ने गोद लिया है। वहां पर लगभग डेढ़ करोड़ की लागत से गुरूकुल का निर्माण किया है। प्रज्ञाकुंज गुरूकुल में 450 बच्चे अध्ययन कर रहे हैं। जिनमें आर्थिक रूप से असमर्थ बच्चों के लिए संस्था की ओर से खर्च वहन किया जाता है।

ज्ञानमंच पर स्थापित की गई परमपूज्य गुरुदेव की 17 फीट की जीवंत प्रतिमा

देवात्मा हिमालय से बहेगी ज्ञान की गंगा

संस्कृति संचार ब्यूरो

गायत्री महाकुंभ की हर ओर की छटा निराली है। लालजी वाला क्षेत्र में स्थापित ज्ञानमंच का भी रूप भी अद्भुत है। इसे देवात्मा हिमालय का आकार प्रदान किया गया है। जिस प्रकार धरती के निर्माण के पीछे हिमालय का विशेष योगदान रहा था। उसी प्रकार गायत्री महाकुंभ में बना ज्ञान मंच विशाल हिमालय जैसे उच्च आदर्शों को जीने और इसमें स्थापित की गई आचार्यश्री की 17 फीट की मूर्ति उनके विचारों को आत्मसात करने प्रेरणा दे रही है। ज्ञान मंच का यह सुन्दर दृश्य हर प्रकार से आगंतुको को आकर्षित कर रहा है। चाहे बाहरी खूबसूरती की बात हो या आंतरिक संतुष्टि की यह सभी आनन्दित कर रहा है। प्राचीन काल से ही हिमालय ज्ञान का आधार बना रहा है। साधना, तपस्या के लिए हिमालय सबसे प्रिय स्थान रहा। वहां साधकों ने तप साधना की और अपने ज्ञान को हिमालय जैसी ऊँचाई दी और इतिहास में हमेशा के लिए प्रेरणा का आधार बन गये। यह परंपरा हर युग में चलती रही और चाहे वह मानव हो या दानव हर किसी ने अपने विवेक के आधार पर अपने मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए हिमालय का सहारा लिया। इस युग के ऋषि परमपूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने जीवन भर कठोर तपश्चर्या की और एक आदर्श प्रस्तुत किया।

उसी विचार पुरुष की शताब्दी में बने ज्ञान मंच में हिमालय की विशालता को दर्शाया गया है। गुरुदेव की विशाल मूर्ति के साथ हिमालय का दृश्य श्रद्धालुओं को परम चेतना से जोड़ता है। कहते भी हैं कि इस धरती पर संग्रह करने की वस्तु ज्ञान है और हमें ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि करनी चाहिए।

16 रूसी महिलाओं ने रखा छठ का कठोर व्रत

गायत्री महाकुंभ में शिरकत करने आईं रूस की 16 युवा महिलाओं ने भी छठ पर्व के लिए कठोर व्रत रखा। उन्होंने गौरीशंकर तीन क्षेत्र में बिहार की 900 महिलाओं के साथ खरना पर्व मनाया। उन्होंने इन महिलाओं के साथ 48 घंटे का कठोर व्रत रखा और निराहार रहीं। देश-विदेश से आये 30 हजार से अधिक लोगों ने यहां एक साथ गंगा के तट पर छठ पर्व मनाया।

पहली बार घर से बाहर रह कर छठ मना रहे इन श्रद्धालुओं में 400 पुरूषों ने भी निराहार व्रत रहकर सूर्य को अर्घ्य दिया। उन्होंने गौरीशंकर-तीन में खीर व घी चुपड़ी रोटी खाकर इसकी शुरूआत की। इस आयोजन में अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डा. प्रणव पंड्या व शैल जीजी भी पहुंचे। इस मौके पर डा. पंड्या ने कहा कि सूर्य पूरी सृष्टि को प्राण देता है। जो लोग इस व्रत को रखते हैं, निश्चित ही उनके व उनके परिजनों के ऊपर अमृत वर्षा होगी।

रूस की 28 वर्षीय एलिना व 40 वर्षीय ल्यूबिला समेत सभी 16 महिलाओं ने कहा कि वे ये व्रत रखने को लेकर काफी रोमांचित रहीं। खरना पर्व मनाने के लिए आयोजित हुए विशेष कार्यक्रम में गीत-संगीत जारी रहा। शांतिकुंज से आये कलाकारों ने भजन प्रस्तुत किये और उसके बाद बिहार की महिलाओं ने छठ गीत गाकर माहौल को बिहारमय कर दिया।

तुलसी से सुभाषित महाकुंभ का आंगन

आचार्य श्री की जन्म शताब्दी समारोह के लिए बनाए गए तंबुओं के नगरों की छटा निराली है। यहां बने हर आंगन की लिपाई गोबर से की गई है। इसके साथ सभी तम्बुओं के दर[illegible] और सामूहिक आंगनों में तुलसी के पौधों का रोपण किया गया है। यहां के हर नगर की शोभा निराली है।

सभी तम्बुओं के बाहर रंगोली सजाई गई है। जगह-जगह गायत्री महामंत्र का सामूहिक उच्चारण किया जा रहा है। जिसे देखकर आगंतुक गद्गद हो रहे हैं। यहां के नगर गायत्री, गंगा, गुरूदेव, गीता और गाय के साथ तुलसी के पौधों के साथ आध्यात्मिकता की परिपूर्णता को प्रदर्शित कर रहे हैं।

जीवन को धन्य बनाने का अनुपम अवसर

ऋण चुका कर जीवन को धन्य बनाने का सुअवसर आ गया है। इसी भाव के साथ मथुरा निवासी चन्द्रभान सारस्वत जो एनटीपीसी दादरी में पर्चेज ऑफीसर के पद पर कार्यरत हैं, गुरुदेव के जन्मशताब्दी में निस्वार्थ भाव से गुरुवर के सपने सजाने में लगे हैं। हर छोटे बड़े कार्य को गरूदेव के प्रति सेवा के भाव से पूर्ण करने में लगे हैं। इनका यही मानना है कि गुरूदेव की नाव में बैठकर भवसागर को पार करने का समय आ गया है। कई दशकों से इंतजार किया है तब यह अवसर आया है।

वे 1988 में मिशन से जुड़े जब एक गंभीर बीमारी की चपेट में आकर अस्पताल में भर्ती हुए और डॉक्टरों नें ऑपरेशन की सलाह दी। जीवन और मौत के बीच झूल रहे थे। अचानक दर्द बहुत तेज बढ़ गया तभी गुरूदेव सपने में आकर बोले बेटा तू चिन्ता मत कर अब तू बिल्कुल ठीक हो गया है। और सच में उनकी तबियत ठीक होने लगी, तब से उन्होंने गुरुदेव को ईश्वर के रूप में अपना आराध्य बना लिया। आज जन्मशताब्दी महोत्सव में अपने कार्य से 20 दिनों का अवकाश लेकर वैरागी द्वीप के एन सी आर भोजनालय में एक स्वयंसेवी के रूप में सेवारत हैं।

उन्होंने कहा कि बड़े ही सौभाग्य की बात है कि हम गुरू की सेवा में कुछ कर सकें, इस भव्य आयोजन के निमित मात्र बन सकें। एक ऐसे गुरू के शिष्य होने के नाते श्रमदान हमारा परम कर्तव्य है। कमाने में तो पूरी जिंदगी निकल गई पर यह अवसर इस जीवनकाल में दोबारानहीं आयेगा।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी द्वारा रचित सम्पूर्ण साहित्य का प्रदर्शन एवम् विक्रय

आचार्य श्रीराम शर्मा जन्म शताब्दी महोत्सव

विराट पुस्तक मेला

1500 से भी अधिक विषय

1 से 10 नवम्बर 2011

स्थान

प्रदर्शनी के पास | यज्ञशाला के सामने

रोडी बेल वाला क्षेत्र | लालजी वाला क्षेत्र

समय

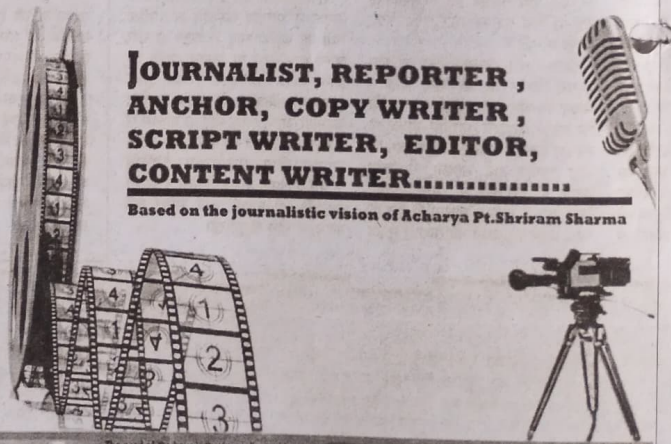

सुबह 8.00 से रात्री 9.00 बजे तक

JOURNALISM & MASS COMMUNICATION

DSVV HARIDWAR

The University has been established by the act of government of uttrakhand & recognized by UGC.

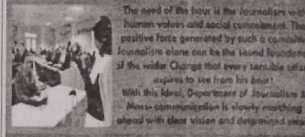

JOURNALIST, REPORTER, ANCHOR, COPY WRITER, SCRIPT WRITER, EDITOR, CONTENT WRITER................

Based on the journalistic vision of Acharya Pt.Shriram Sharma

The need of the hour is the Journalism with human values and social commitment. The positive force generated by such a committed Journalism alone can be the sound foundation of the wider Change that every sensible citizen aspires to see from his heart. With this Ideal, Department of Journalism & Mass-communication is slowly marching ahead with clear vision and determined steps.

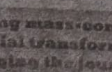

Within a very short span of time Dsvv has emerged as an educational hub across the globe. The university which focuses not on making students, simply a degree holder but on making them a true and perfect human being and ideal citizen of the world, first. These are the attributes which really make it a university with a difference.

COURSES OF ADMISSION

MASS COMMUNICATION

MJMC & DJMC

Using mass-communication as a tool of social transformation.......... forming the journalists, who can deliver,

BJMC

Dept. of Journalism & Mass communication, Dev Sanskriti Vishwavidhyalaya

बद्रीनाथ बना प्रवेशद्वार केदारनाथ से मंत्रोच्चार

गरुड़ की सवारी करेंगे यज्ञदेवता, 1551 कुण्डीय यज्ञ करेगा पर्यावरण का शोधन

गीता मे भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- सृष्टि यज्ञ द्वारा ही उत्पन्न हुई और वह यज्ञ में ही स्थित है। उपनिषदों में भी कहा गया है कि यज्ञ इस सृष्टि की धुरी है। बिना धुरी के जीवन की गाड़ी का पहिया आगे नहीं बढ़ सकता। इसी को आधार मानते हुए युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के जन्मशताब्दी महोत्सव के अवसर पर मां गंगा के पावन तट पर गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में 1551 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ को भारतीय संस्कृति का पिता कहा गया है। हमारी संस्कृति को जो महत्व वेदों से प्राप्त हुआ है, वही यज्ञ से भी प्राप्त होता है। यज्ञ हमें त्यागमय जीवन जीने की शिक्षा देता है। जिसके माध्यम से हम एक अच्छे समाज की कल्पना कर सकते हैं।

युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने पहला सहस्र कुण्डीय यज्ञ मथुरा में नवंबर 1958 में किया था। उसे उन्होंने ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान नाम दिया था। शालीनता की भाषा में यह कहा था कि ऐसा यज्ञीय प्रयोग महाभारत के बाद पहली बार हो रहा है। किन्तु शोध करने पर सिद्ध होता है कि इस प्रकार का यज्ञीय प्रयोग विश्व इतिहास में पहली बार ही हुआ था। उस यज्ञ में उन्होंने कुछ क्रांतिकारी घोषणाएँ की थीं, जो आज प्रत्यक्ष घटित होती दिख रही हैं। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गायत्री परिवार ने अश्वमेध यज्ञों की एक शृंखला चलाई। अब इसी तरह का प्रयोग हरिद्वार की पावन धरा पर होने जा रहा है। इस यज्ञीय प्रयोग के लिए एक विशेष प्रकार की यज्ञशाला का निर्माण किया गया है। आइए जानते हैं क्या खास है इस यज्ञशाला में-

बद्रीनाथ बना है प्रवेशद्वार

1551 कुण्डीय यज्ञशाला के प्रवेशद्वार को उत्तराखंड के चार धामों में एक बद्रीनाथ के भांति बनाया गया है। इस प्रवेश द्वार की अपनी महत्ता है क्योंकि बद्रीनाथ को भगवान विष्णु के रुप में पूजा जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस यज्ञशाला के प्रवेशद्वार पर भगवान विष्णु विराजमान है।

केदारनाथ से होगा मंत्रोच्चार

प्रवेशद्वार के सीध में ही मंच संचालन के लिए विशेष मंच बनाया गया है। जिसे देखने पर वह केदारनाथ भगवान के मंदिर के रूप में दिखाई देता है। जहां से ब्रह्मवादिनी बहिनों के माध्यम से यज्ञीय प्रक्रिया को संचालित किया जाएगा। भगवान केदार, शिव के स्वरूप हैं।

उभरेगा वृक्षारोपण का संकल्प

इस आयोजन में लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा। यज्ञ मे आए याजकों को सकल्प रूप में एक-एक पौधा दिया जाएगा। जिसके रखरखाव और उसके पालन पोषण की जिम्मेदारी याजक की होगी। इस तरह इस यज्ञ के माध्यम से करोड़ो पौधों का रोपण संभव हो सकेगा। इसके लिए पहले से 7 लाख पौधों की व्यवस्था की जा चुकी है।

गरुड़ के आकार की है यज्ञशाला

1551 कुण्डों से बनी इस यज्ञशाला को गरुड़ाकार बनाया गया है। इस यज्ञशाला में लगभग 9 प्रकार के कुण्ड हैं। जिन्हें पूर्णतया गंगा तट की मिट्टी और रेत से बनाया गया है। इस यज्ञ में विशेष प्रकार से विश्व शांति और वैचारिक बदलाव के लिए विशेष मंत्रों का प्रयोग भी किया जाएगा। इन कुण्डों में अरणी मंथन के माध्यम से अग्नि प्रज्ज्वलित की जाएगी।

पर्यावरण का होगा शोधन

पर्यावरण प्रदूषण आज की एक विकट समस्या है। यज्ञ इससे निपटने का एक पौराणिक उपाय है। यज्ञ की उष्मा से वायुमण्ड की हवा गर्म होकर हल्की हो जाती है व ऊपर उठने लगती है, उसमे आस पास की हवा इसका स्थान लेने लगती है और यज्ञ के ताप से कीटाणु मुक्त होकर दूर-दूर तक फैलती है। जिससे हानिकारक कीटाणु व विषाणु मर जाते हैं। इस तरह संगंधित जड़ी बूटियों व औषधियों का धुँआ इस कार्य को और प्रभावशाली बनाता है। आज वायु में कार्बन, सीसे व अन्य जहरीले कणों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि हृदय व अन्य गंभीर रोगों के होने की संभावना बढ़ती जा रही है। जिसमें यज्ञ बहुत ही प्रभावी असर करता है और वायुमण्डल को शुद्ध करता है। इसके साथ ही मानव जीवन पर हावी हो रहीं दुष्प्रवत्तियों के शुद्धिकरण के लिए भी यह यज्ञ सहायक सिद्ध होगा।

Dev Sanskriti University

The University has been established by the act of Government of Uttrakhand & recognized by UGC.

"There is a need for an educational institution which can mould its students into noble, enlightened, selfless, warm-hearted, compassionate and kind human beings." - "Pt. Shriram Sharma Acharya"

Quality Based Education At DSVV

Well qualified & reputed faculty.
Collaboration with leading national and international institutions like-

- *International Institute of Vedic science, Berlin, Germany.*
- *Memonize University, Boonose, Arzentina.*
- *Yujhani Institute of Management, Krasnodor, Russia.*
- *Institute of Cancer & Genetics, Krasnodor, Russia.*
- *Jiansi University of traditional Chinese Medicine, Nanchng, China.*

Fully Wi-Fi enabled lush clean-green & serene campus spread over 90 Acres.

Complete Residential Campus With top class facilities

Holistic Approach for Personality Development

- Gyan Deeksha
- Spiritual ambience
- Geeta & Meditation classes
- Scientific Spirituality
- Life Management classes
- Special Internship programme
- Civil Service programme Training
- Sports, NSS programme

"A BLEND OF SPIRITUAL LIFE STYLE AND MODERN TECHNOLOGY."

Dr. Pranav Pandya (MD) Chancellor, DSVV, Haridwar

Dr. Sukhdev Sharma Vice-Chancellor, DSVV, Haridwar

Gyan Deeksha

MoU signing, Berlin Germany

Interaction With National leaders

Bharat Ratna Dr.APJ Abdul Kalam Former President of India

Her Holyness. Dr. Margret Alva Governer of Uttrakhand

Website
www.dsvv.ac.in

Courses Offered

Master Degree Courses

1.	M.A/M.sc	Clinical Psychology
2.	M.sc	Yogic Science & Holistic Health
3.	M.A	Applied Yog & Holistic Health
4.	M.A	Indian History Culture
5.	M.A	Tourism Studies
6.	M.A	Applied Education
7.	M.A	Journalism & Mass Communication
8.	M.sc	Computer Science

Diploma Courses

1.	PG Diploma	Human Consciousness & Alternative Therapy
2.	PG Diploma	Yog Therapy & Spiritual Counselling
3.	PG Diploma	Journalism and Mass communication
4.	PG Diploma	Guidance and Counselling
5.	Diploma*	Animation (after 10+2 with 50% marks)
6.	Diploma(Ad. 3D)	Animation (after 10+2)

Graduation Courses

1. B.A.
2. B.Sc.

Certificate Courses (Six Month)

1. Holistic Health Management
2. Rural Management & Entrepreneurship
3. Theology
4. Yog and Alternative Therapy
5. Water Conservation
6. Jyotish Piyush

For More Contact :- Dev Sanskriti Vishwavidhyalaya, Gaytrikunj-Shantikunj, Haridwar-249411, Fax No. 260733 (Uttrakhand) India.

प्रदर्शनी में गुरूदेव का व्यक्तित्व, कृतित्व और देव संस्कृति विश्वविद्यालय हो रहा है शोभायमान

प्रदर्शनी में जीवंत हुई चेतना की शिखर यात्रा

संस्कृति संचार ब्यूरो

गायत्री महाकुंभ बासंती रंग में रंग चुका है। महोत्सव क्षेत्र में लगाई गई विशाल जीवन्त प्रदर्शनी में लोगों की भीड़ सुबह से शाम तक इसकी रंगीनियत को बना रही है। गुरूदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व को जीवंत करती इस प्रदर्शनी में चेतना की शिखर यात्रा परिलक्षित हो रही है। इसके साथ ही गुरूदेव के सपनों के विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी शोभायमन हो रही है।

यह प्रदर्शनी 250 फीट और 80 फीट चौड़ी है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मूर्तियों, कलाकृतियों और झाकियों के माध्यम से परमपूज्य गुरूदेव के जीवन वृत्त को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी को मुख्य रुप से रूप से तीन भागों मे बाटां गया है। प्रथम भाग मे गुरूदेव के जीवन भर की यात्रा, जिसमें गुरूग्राम आँवलखेड़ा के साथ जीवन्त झाकियां लगायी गयी है। इसमें गुरुदेव का दीक्षा संस्कार, दादा गुरु से साक्षात्कार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रीराम मत्त, इसके साथ गुरूदेव ने जीवन भर जिन वस्तुओं का उपयोग किया उनका संग्रह भी प्रदर्शित किया है। यह वस्तुएं प्रथम बार किसी समारोह में जनसामान्य के बीच रखी गई है। इसके अलावा गुजरात से आये नन्दू भाई और उनकी पत्नी ने गुरूदेव की 3200 पुस्तकों का प्रदर्शन किया है, जो गुरुदेव के प्रति उनकी आस्था का प्रतीक है।

प्रदर्शनी के दूसरे भाग में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के कृतित्व को दिखाया गया है, जिसमें युग निर्माण मिशन, सात क्रान्तियों को सचित्र समझाया गया है। आचार्य श्री द्वारा चलाए गए अभियानों का भी वर्णन किया गया है। प्रदर्शनी में गुरुदेव की कई मुद्राओं में पेंटिग्स लगाई गई है। जिन्हे गुजरात और उत्तर प्रदेश से आए चित्रकारों ने बनाया है।

जीवन विद्या के आलोक केंद्र और गुरूदेव के सपनों के विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी इस विशाल क्षेत्र के तीसरे भाग में है। इसमें विश्वविद्यालय के उद्देश्यों और गुरूदेव की परिकल्पना के साकार रूप का चित्रण किया गया है साथ में प्रज्ञेश्वर महाकाल का सुन्दर मॉडल बनाया गया है। इस प्रदर्शनी में जाकर आप विश्वविद्यालय में चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी ले सकते है। यहां विवि के विद्यार्थी आपकी मदद करेंगे।

महोत्सव में छायी गांधी की खादी

गांधी जी के सपनों के भारत निर्माण में खादी पहनने के साथ श्रीराम शर्मा आचार्य प्रणीत विचार क्रांति अभियान की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। समाज को दिशा देने के साथ ही सम्मानजनक जीवकोपार्जन एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिसका आदर्श ग्राम अभियान में छिपा है।

केन्द्रीय खादी एवं ग्रामोद्योग ने भी गायत्री महाकुंभ में खादी की राज्य स्तरीय प्रदर्शनी लगाई गई। इसका उदघाटन 2 नवंबर का केन्द्री य खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग आयुक्त जयशंकर मिश्र ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि शांतिकुंज के साथ मिलकर देश के हर जिले में खादी ग्रामोद्योग की एक इकाई स्थापित की जायेगी। उन्होंने कहा कि आयोग शांतिकुंज की तरफ से चलाये जा रहे खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रमों में भी उनका पूरा सहयोग रहेगा। फिलहाल उत्तराखंड मंस उत्पलटा, हल्द्वानी, भोगपुर व मुनस्यारी में चल रही शांतिकुंज की इकाईयों के उत्पादन को बाजार में बेचने का काम खादी ग्रामोद्योग के आउटलेट कर रहे हैं।

मिश्र ने बताया कि खादी एवं ग्रामोद्योग देश में 1 करोड 18 लाख परिवारों को रोजगार मुहैया करा रहा है। आने वाले दिनों में 35 लाख नये रोजगार खादी व ग्रामोद्योग द्वारा दिये जायेंगे। विदेशों पर बढ़ती निर्भरता को कम करने के लिये कुटीर उद्योगों के विकास को महत्वपूर्ण बताते हुए मिश्र ने कहा कि गाओं की आर्थिक सामाजिक संरचना को सुधार कर ही समग्र विकास का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा। खादी ग्रामोद्योग देश में तेजी से विकास कर रहा है।

युग ऋषि के आदर्श गांव की ग्राम तीर्थ योजना का मॉडल

संस्कृति संचार ब्यूरो

गांधी जी ने कहा था कि भारत को देखना हो तो हमारे गावों को देखें, क्योंकि भारत गावों में बसता है। हर व्यक्ति को गांव के उत्थान के लिए सोचना चाहिए वही हमारा मूल है। गांधी जी की इस संकल्पना को पुनर्जीवित करने का कार्य किया पं0 श्रीराम शर्मा जी ने जिन्होने ग्राम तीर्थयोजना से आदर्श माडॅल तैयार किये और समाज को इसके लिए जागरुक किया। गावों को तीर्थ बनाने की बात कही जिससे लोगो का रूझान गावों की ओर ज्यादा हो और वह हमेशा उससे जुड़ा रहे।

इन्ही बातों को देखते हुए गायत्री महाकुम्भ में लोगों के बीच आदर्श ग्राम के मॉडल को रखने लिए एक प्रदर्शनी लगायी गयी। जिसका संचालन ग्राम प्रबंधन विभाग देसविवि शांतिकुज कर रहा है। गावों को स्वच्छ, सुशिक्षित, स्वावलंबी, संस्कारयुक्त, व्यसनमुक्त बनाने का संकल्प है। गावों से ही किसी बालक का प्राथमिक विकास होता है वह वहीं से सीखता है कि उसे भविष्य में कैसे रहना है। प्रदर्शनी में गावों मे होने वाली समस्याओं को देखते हुए उनका समाधान भी दर्शाया गया है। 100 प्रतिशत रोजगार के लिए गोपालन, हस्तकरघा, कपड़ा बुनाई आदि उद्योगों के बारे में जानकारी दी है। गावों में गंदगी की समस्या से निपटने के लिए वेस्ट मैनजमैन्ट की वैज्ञानिक तकनीक को समझाया गया है। गाय के मल, मूत्र से बनने वाली औषधियों की जानकारी दी है जिसमें अर्क, दर्दनिवारक तेल, साबुन, मंजन ,पंचगव्य इत्यादि शामिल है। गाव को गाँव का सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी पशु बताया गया है जिसके माध्यम से हम अपने परिवार का पालन पोषण कर सकते है। घरेलू सामग्री और तकनीक के माध्यम से अनेक पदार्थ जैसे जैम, अचार, मुरब्बा, और बुकनु बनाने के तरीकों को भी समझाया गया है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो व्यक्ति को प्राकृतिक जीवन जीने के लिए आदर्श ग्राम का मॉडल दिया है, जो उसके स्वास्थ्य और दैनिक जीवन के लिए लाभकारी होता है।

रोगों की औषधीय चिकित्सा की प्रदर्शनी...

सजीव हो रही आयुर्वेद की पुरातन विधा

संस्कृति संचार ब्यूरो

शरीर को भगवान का मंदिर कहते है और मंदिर को स्वस्थ रखना भी भगवान की पूजा है। यह बात हमारी संस्कृति हमें बताती है क्योंकि यह देव संस्कृति है, ऋषियों के तप साधना के प्रयोगों से पूरित है। चरक, सुश्रुत, विश्वामित्र, वशिष्ठ ने जो परम्परा, तरीका दिया उसी के अनुसार हमारा जीव क्रम संचालित होता है। उसी से दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या चलती है। ऋषि प्रदत पौराणिक आयुर्वेद ज्ञान सारे विश्व के सामने चिकित्सा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ है। इसके पीछे उसकी विशिष्टता और गुणता है जिस कारण यह आज सारे चिकित्साशास्त्र के मूल में स्थित है।

ऐसे विशेष ज्ञान को सार रूप में प्रस्तुत करने का काम गायत्री महाकुम्भ में लगी भव्य प्रदर्शनी में किया गया है। जिसमें आयुर्वेदसार से लेकर आज के आधुनिक शल्य क्रिया को प्रदर्शनी के माध्यम से दिखाया गया है। वहां के मॉडलों के माध्यम से दैनिक जीवन की आदर्श जीवनचर्या को दिखाया गया है। जो ज्ञान ऋषियों के आध्यात्मिक प्रयोगों से प्रस्फुटित हुआ है उसे आधुनिक मापदण्डों के आधार पर प्रदर्शित किया गया है।

150 से अधिक औषधीय पौधों का विभिन्न बीमारियों में उपयोग को बताया गया है जिसमें कैंसर रोग के लिए काली हल्दी, कफके लिए वासा जैसे पौधों के महत्व को बताया गया है। 41 प्रकार के चूर्णों और वटी का औषधीय उपयोग बताया गया है।

सप्त आन्दोलनों के आधार पर स्वास्थ्य को परिभाषित किया गया है। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने का काम कर है जो पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी की परिकल्पना समाज में स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन और सभ्य समाज को स्थापित करेगी।

गायत्री महाकुंभ झलकियां

रामराज की दिख रही झलक

महोत्सव में प्रबधंन की इतनी सुन्दर व्यवस्था, मानो राम राज्य आ गया हो, कोई भी कहीं आ जा सकता है, इतनी ज्यादा भीड़ और फिर भी व्यवस्था एकदम सटीक। यह कोई साधारण काम नहीं यह देवी अनुग्रह से होने वाला कार्य है जहां सूक्ष्म सत्ता भी सहयोग कर रही है। क्योंकि यह वही भीड़ है जिसके लिए सरकार पुलिस तंत्र का इन्तेजाम करती है। आश्चर्य की बात है कि इतने बड़े क्षेत्र पर जहां आज में स्वतंत्र घूम रहे हैं वहां लम्बी-लम्बी घास को, दूर-दूर से आये स्वयंसेवी ने अपने परिश्रम के बल से काट दिया। उन्हें भी आज यह देखकर आश्चर्य ही होता है। कुछ लोग अपने गले में साहित्य को लटकाये घूमते रहते हैं, उनसे पूछा कि आप ये क्या कर रहे हैं, तो जवाब था अपने गुरु के विचारों को जन- जन में फैलाने का कार्य कर रहा हूँ। अनेक ऐसे लोग है जो अपनी नौकरी, व्यवसाय, घर छोड़कर पिछले कुछ महीनों से यहां रह रहे हैं, उन्हें न अपने घर की चिंता और न अपनी नौकरी की, बस उद्देश्य एक ही है गुरुकार्य के लिए समर्पित हो जाना चाहे उसमें कुछ भी छोड़ना पड़े।

सादगी और समर्पण की मिसाल

आम आदमी से लेकर खास आदमी तक गायत्री महाकुम्भ का अंग बन रहे है। जहां एक प्रोफेसर सुरक्षा गार्ड की ड्यूटी करता है, वही दूसरी ओर आफिसर रैंक का व्यक्ति झाड़ू लगाते, घास काटते देखा जा सकता है, वास्तव में ये दुर्लभ दृश्य देखकर गौंगटे खड़े हो जाते हैं।ये मतवाले लोग उस त्रेतायुग की गिलहरी के समान हैं, जहां पर एक ही भाव हावी रहता है वह है अपने गुरु के कार्य में अपनी भागीदारी देना। ऐसा नजारा अक्सर ही समारोह में देखने में मिल रहा है, रात भर ठण्ड में बैठे सुरक्षा गार्ड को देखिये, भट्टी के सामने रोटी सेंकते व्यक्ति को देखिये, लोगों की जूठन साफ करते लोगों को देखिये, जो घर पर झाड़ू नहीं लगाते थे वह यज्ञशाला की सफाई की जिम्मा लिए बैठे हैं, बड़े घरों की महिलाएं गोबर और मिट्टी के कार्य में उत्साह पूर्वक भाग ले रही हैं। इन सभी लोगों का कोई प्रत्यक्ष स्वार्थ नहीं है केवल एक ही भावना है समर्पण की।

संस्कृति के ज्ञान का विकास

आज समाज में शिक्षा का स्तर उद्योगवादी होता जा रहा है, शिक्षा से आशय केवल नौकरी हो रहा है जिसके कारण छत्रों में संस्कारों की कमी होती जा रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए गायत्री परिवार द्वारा संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर से संस्कृति की बातें बतायी जाती हैं और उनकी परीक्षा का आयोजन करके राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाता है।

कलामंच में मूर्त रूप ले रही भावों की साधना

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की जन्मशताब्दी में जीवन के प्रत्येक पक्ष को संवारने का अभिनव प्रयोग इन दिनों किया जा रहा है। 1 से 10 नवंबर 2011 तक चलने वाले इस गायत्री महाकुंभ में कलामंच से युगऋषि के जीवन व कृतित्व के साथ-साथ आचार्य श्री का कलाप्रदर्शन भी विभिन्न कलात्मक एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से प्रदर्शित किया जा रहा है।

शताब्दी पुरुष की संकल्पना को साकार करता यह कला मंच स्वयं में अनूठा एवं अद्वितीय है। जहाँ कला की मौलिकता, मूल्य निष्ठ एवं उसके प्राण ही प्रमुख रुप से मुखर हो रहे हैं। स्वयं उनके शब्दों में.... पिछले दिनों इन कला मंचों का उपयोग लोगों की मांग पूरी करने के दृष्टिकोण से अधिक होता रहा है। सरलता भी उसी में है और मांग अधिक होने से लाभ भी। ऐसी दशा में इन कला प्रयोजनों में दो ही उद्देश्य झाँकते पाए जाते हैं। एक कामुकता भड़काने वाले प्रसंग, दूसरे देवी-देवताओं के कौतूहलवर्धक एवं श्रद्धा को अस्पष्ट करने वाले गीत-अभिनय। एक शब्द में इतना कहा जा सकता है कि जिस दिशा में हम लोकमानस को घसीटकर ले जाना चाहते है उस दिशा में योगदान प्रायः नहीं ही मिल रहा है।

युग पुरुष के ये शब्द आज की वस्तुस्थिति की स्पष्ट व्याख्या करते नजर आ रहे हैं और इसमें शत् प्रतिशत सत्यता भी है। अश्लीलता को व्यापार बनाकर धन ऐठना आज का प्रचलित व्यापार बन चुका है। ऐसे लोगों की आज समाज में कमी भी नहीं है। वस्तुतः लोकरंजन से लोकमंगल व लोकशिक्षण की परिपाटी को आधार बनाकर चलने वाली कला ही समाज राष्ट्र व विश्व की सच्ची हितैषी हो सकती है। इस कला मंच का उद्देश्य कला क्षेत्र में आई विकृतियों को दूर कर कला को सृजन के लिए नियोजित करना तथा जनमानस को प्ररित कर शिक्षण देना है। कला मंच पर प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रमों में पूज्य गुरुदेव जीवन प्रसंग, साहित्य, प्रर्यावरण, सप्तआंदोलन आदि को समावेशित कर इस उद्देश्य को कला मंच द्वारा पूर्ण भी किया जा रहा है।

भावना की साधना स्थली इस कला मंच पर विगत दिनों विभिन्न संस्कृति पुष्पों ने अपने सुगंध बिखेरी है, तथा इस भारत भूमि पर विस्तृत गौरवमयी संस्कृति का चित्रण व प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है जिसमें उड़ीसा, महाराष्ट्र का लोक नृत्य, छत्तीसगढ़ का पंथी नृत्य व पंडवानी नृत्य, कश्मीरी, गुजराती गरबा, मध्य प्रदेश की निमाड़ी, असम का

बीहु आदि का प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। भारती ग्रुप दिल्ली की सप्तआंदोलन आधारित नाटिकाओं के साथ-साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार के आरंभ है प्रचण्ड, धन्य-धन्य नारी जीवन जैसे नृत्यों, ईश-प्रतिज्ञा नाटिका व जब भी कोई राग सुनाना गुरु के गीत सुनाना रे जैसे प्रज्ञागीतों ने शताब्दी पुरुष के विराट व्यक्तित्व का प्रस्तुतिकरण किया है। इसी तरह के प्रयास आगामी दिनों में विभिन्न राज्यों के समूह व विश्वविद्यालय परिवार की आगामी प्रस्तुतियों में भी किए जाने हैं। जिनके माध्यम से भारत की विशाल संस्कृति का अवलोकन आप सब करेंगे।

यही युगपुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का स्वप्न है। जो कलामंच के माध्यम से मूर्तरुप ले रहा है और फलित हो रही हैं भावों की साधना - युग निर्माण कला।

कला जीवन को सुन्दर बनाती है : डॉ. पण्ड्या

कला जीवन को सौन्दर्यमय व कलात्मक बनाती है। जीवन के उल्लास को ऊर्ध्वगामी दिशा देती है व समाज के भावनात्मक परिष्करण में योगदान देती है। किन्तु आज कला विकृति के दौर से गुजर रही है। हॉलीवुड-बॉलीवुड के माध्यम से कामोत्तेजक भावों को जगाने-उभारने का काम कर रही है। नाटक के माध्यम से प्रेषित एक संदेश जीवन की काया पलट सकता है। गांधी जी के हृदय पर हरिश्चंद्र नाटक की ही अमिट छाप पड़ी थी। कला जीवन को सरस बनाती है। बिना कला के जीवन नीरस है। यह भाव उद्गार थे परमपूज्य गुरुदेव के जन्मशताब्दी समारोह में कलामंच का उद्घाटन करने पहुचे अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या और आदरणीय शैल जीजी के। इस अवसर पर जीजी ने कहा कि कला का उद्भव भावों से हुआ है। जो जनचेतना के उन्नयन में सहायक है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीपप्रज्ज्वलन और डॉ. साहब और आदरणीया जीजी के स्वरों में मातृवन्दना के साथ हुआ। इसके बाद शांतिकुंज के संगीत विभाग के कार्यकर्ता भाइयों ने समूह वाद्ययंत्रों की अद्भुत जुगलबंदी से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसने संदेश दिया कि एकस्वर में सामूहिक संगीत का प्रभाव कितना चमत्कारिक हो सकता है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राओं ने गणपति वंदना एवं प्रज्ञा गीत के माध्यम से कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इस मौके पर छात्राओं की योग प्रस्तुति सराहनीय और विस्मयकारी रही। छात्रों के डांस आरंभ है प्रचंड ने उपस्थित जनों में वीर रस का संचार किया।

जहां असम के बिहू नृत्य में लोकसंस्कृति के स्वर उभरे। वहीं भारती ग्रुप ने आचार्य जी के जीवन पर आधारित प्रभावशाली नाटिका प्रस्तुत की। पूज्यवर के बाल्यकाल, जीवन साधना, स्वतंत्रता संग्राम के विविध स्वरूपों को दर्शाती जीवंत प्रस्तुति ने दर्शकों को आह्लादित किया। उड़ीसा के पुरातन कला बीरवा की शानदार प्रस्तुति रही। छत्तीसगढ़ के मंथी नृत्य के जोशीले एवं शौर्यपूर्ण प्रस्तुति ने दर्शकों को जोश से ओत प्रोत कर दिया। इस मौके पर कलामंच का पंडाल दर्शकों से खचाखच भरा रहा।

छाई सतरंगी संस्कृति

दूसरे दिन की सांस्कृतिक संध्या भारत की सतरंगी संस्कृति के नाम रहीं। कश्मीर के मोहक नृत्य और बंगाल के रवीन्द्र संगीत के साथ गुजराती गरबा, झारखण्ड के घूमर, सिक्किम व उड़ीसी नृत्य के साथ ही वीर भूमि महाराष्ट्र के 67 कलाकारों ने वारकरी नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। साथ ही वृक्षों के संरक्षण व व्यसनों के कुप्रभाव के प्रति जागरूक करती नुक्कड़ नाटिका परिष्कार का भी सुन्दर मंचन किया गया।

बिखरा संस्कृति का रंग

तीसरे दिन भी विभिन्न कलात्मक प्रस्तुतियों ने आकर्षित किया। वैष्णवी ग्रुप की प्रस्तुति गंगावतरण के साथ देसंविवि के भगवान जगन्नाथ धाम ने उड़ीसा की संबलपुरी सस्कृति को प्रस्तुत किया। छात्राओं द्वारा योग का व्यवहारिक एवं जीवन्त प्रदर्शन किया। इसके अतिरिक्त मराठी लोक नृत्य, तमिल नृत्य, राजस्थानी नृत्य आदि तीनों राज्यों की संस्कृति का जीवंत प्रदर्शन किया गया। भारती ग्रुप की प्रस्तुती 'मैं निर्दोष हूं' ने कन्या भ्रूण हत्या पर प्रहार किया।

कवियों ने जमाया रंग

चौथी सांस्कृतिक संध्या की शुरुआत कवि सम्मेलन के साथ हुई। जिसमें देसंविवि. के प्रवक्ता श्री गुलाम असगरी चैदी जी, श्री मंगलविजय वर्गीय, श्री श्याम बिहारी दुबे जी, कवि श्री शचीन्द्र भटनागर जी, श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने कविता पाठ किया।

इसके बाद देसंविवि. के सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने अपना शमां बांधा जिसमें मध्यप्रदेश की आदिवासी संस्कृति का प्रस्तुतीकरण, धन्य-धन्य नारी जीवन नृत्य ने नारी जीवन की गरिमा का बखान किया।

समग्रता का संदेश दिया

पाँचवी सांस्कृतिक संध्या का की शुरूआत देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा कव्वाली से हुई। इसके बाद प्रतिष्ठ ग्रुप सहारनपुर ने योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन वृत का चित्रण किया। योग की परिभाषा को साकार करते हुए कलाकारों ने कृष्ण के रूपों जैसे नटखट, माखनचोर, कलिया मर्दक, गीताकार आदि को बाखूबी मंचित किया। गीताकार के रुप में कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र में अर्जुन को पढ़ाया गया पाठ दर्शकों को अमरता का संदेश दे गया।

महाकाल की चली सवारी

पीत वस्त्रधारी गायत्री साधकों की भव्यतम एवं विराटतम सवारी जैसे निकल पड़ी है देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान पर। क्या बाल, क्या वृद्ध, क्या युवा सब इसमें शामिल हैं, लेकिन नारी शक्ति पड़ रही है सब पर भारी। सर पर कलश लिए गायत्री मंत्रोच्चारण करती हजारों मातृशक्तियों के काफिले का नेतृत्व कर रहा है सर्वधर्म समभाव की बानगी पेश करता मुस्लिम दल। मानव मात्र एक समान, हम बदलेंगे-युग बदलेगे के नारे से गुंजायमान हरिद्वार की नगरी में जैसे सतरंगी छटा बिखेरता मिनी इंडिया उतर आया हो। 24 देशों से आए विदेशी मेहमानों की उपस्थिति भारतीय संस्कृति - विश्वसंस्कृति के पुरातन गौरव की याद दिला रही है। आसमाँ से पुष्प वर्षा करता हेलीकॉप्टर इसकी शोभा में चार चाँद लगा रहा है। न्यनाभिराम दृश्य कुल मिलाकर ऐसी छटा बिखेर रहा है कि जैसे स्वर्ग अपने संपूर्ण सौंदर्य, ऐश्वर्य एवं दिव्यता के साथ इस धरा पर उतर आया हो। सारी देवशक्तियाँ जैसे इसमें अपनी सूक्ष्म उपस्थिति दर्ज करा रही हैं, युग ऋषि के जन्मशताब्दी का ऐसा शुभारम्भ सभी को आमंत्रण दे रहा है इस दिव्य अनुष्ठान में भाग लेकर जीवन को धन्य बनाने का।

मुस्लिम श्रद्धालु भी शरीक हुए कलश यात्रा में

भाषा अलग हो पर जुबां से निकला रस, कानों में मिठास घोलने लगे तो समझना चाहिए कि युग निश्चित ही बदलने वाला है। वह दिन दूर नहीं जब सभी धर्मों का वास्तविक स्वरुप सामने आएगा और सभी गर्व से कहेंगे कि हम सब एक हैं। कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला गायत्री महाकुंभ में निकाली गई कलश यात्रा में। इसमें रामपुर के मुस्लिम भाइयों की एक टोली ने भाग लिया, जिसमें लगभग 150 लोग शामिल रहे। यह सभी वर्ल्ड आर्गनाइजेशन आफ रिलीजन एंड नॉलेज के बैनर तले यहां आए थे। इनके साथ एक विशाल झांकी भी थी। जो कुरान और वेदों की समानता के साथ विश्वबंधुत्व की भावना का प्रचार कर रही थी। यह सभी पारंपरिक मुस्लिम वेशभूषा में इस कलश यात्रा में शामिल हुए।

फोटोग्राफर : रितेश, मुकेश, सौरव

देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक समाचार पत्र। **प्रधान संपादक** : कुलाधिपति डॉ. प्रणव पंड्या। **मार्गदर्शन** : कुलपति डॉ. एसडी शर्मा एवं डॉ. चिन्मय पंड्या। **संपादक** : डॉ. सुखनंदन सिंह। समाचार संपादन : अजय भारद्वाज, आदित्य शुक्ल। पेज संयोजन : उमा शंकर तिवारी। मुद्रक : मोनाल प्रिंटिंग प्रेस, राजपुर रोड देहरादून।